ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५५१
वर्ष १२ अंक १२ अगस्त **2019**

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार ४
संपादकी ५
श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी की संपादना ८
-डॉ. जगजीत कौर
सिध गोसटि : विचार व्याख्या १३
-डॉ. मनजीत कौर
अम्रित बाणी ततु वखाणी १७
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
भक्त रामानंद जी २१
-श्री रमेश बग्गा चोहला
श्री गुरु ग्रंथ साहिब का निर्मल संदेश : सरबत्त का भला २३
-डॉ. रछपाल सिंघ
ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै २६
-डॉ. परमजीत कौर
. . . मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग २९
-पांधी ननकाणवी
पंजाब : सिक्खों का हिंदोस्तान को तोहफा ३५
-सिरदार कपूर सिंघ (दिवंगत)
. . . भक्त पूरन सिंघ ४१
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
प्रेरणादायक है जीवन कुम्हार का ४४
-स. करम सिंघ
अध्यात्म क्या है? ४६
-डॉ. नरेश
ख़बरनामा ४८

Final

गुरबाणी विचार

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में भादों महीने के प्राकृतिक अथवा भूमंडलीय वातावरण के प्रसंग में प्रभु-नाम से बिछड़े मनुष्य-मात्र की विवशता की स्थिति एवं अमूल्य मानवी जीवन को व्यर्थ गंवाने के रुझान को बताते हुए इस जीवन रूपी अवसर में प्रभु-नाम का सहारा लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जैसे भादों के महीने में मनुष्य बहुत घबरा जाता है (क्योंकि गर्मी के मौसम में बरसात के द्वारा हवा में नमी ज्यादा हो जाने से हुंमस हो जाती है), वैसे ही प्रभु मालिक के अतिरिक्त अन्य सांसारिक मोह-लगाव होने से घबरा जाना स्वाभाविक है। भादों के महीने में जैसे कोई स्त्री लाख शृंगार भी करे तो वह व्यर्थ ही जाता है, इसी तरह मनुष्य-मात्र द्वारा धारण की जाने वाली बाहरी सजावट किसी काम नहीं आती अर्थात् जीवन की सफलता अर्थपूर्ण कार्य करने में है।

मृत्यु का दृष्टांत देते हुए सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिस दिन यह शरीर खत्म हो गया तो तुझे प्रेत कहा या समझा जाएगा। यम के संदेशी तुझे लेकर चल पड़ेंगे और अन्य किसी को इसका पता नहीं लगने देंगे। जब शरीर में से भंवरा निकल गया तो क्षण में ही जीव, तेरे परिवार वाले तुझे छोड़ देंगे, जिनसे तूने अत्यंत लगाव बनाये रखा है। तब तू हाथ मलेगा। तेरा शरीर कठिन स्थिति में होगा। घबराहट से तेरा रंग काले से सफेद हो जाएगा। जैसा कोई बोता है वैसा ही काटता है। यह मातलोक, यह धरती कर्म किये जाने योग्य खेत ही तो है।

गुरु जी अंत में मार्ग बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि जो मनुष्य प्रभु की शरण में आ जाते हैं गुरु उनको प्रभु-नाम रूपी जहाज में बिठा लेते हैं। वे भादों महीने की नरक तुल्य स्थिति से गुरु से संबंध बनने के कारण बच जाते हैं।

Final

संपादकीय

देश की आज़ादी में सिक्खों का योगदान

भारतवासियों ने हज़ारों वर्ष सामाजिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा धार्मिक गुलामी अपने तन पर झेली। गुलामी का आरंभ उस समय हो गया था जब समाज को चार वर्णों में बांटा गया था। बंटा हुआ समाज कभी भी खुशियों का आनंद नहीं उठा सकता। वर्ण-विभाजन के समर्थक चाहे आज भी इसको 'आदर्श कर्म-व्यवसाय-विभाजन' कहकर इसकी प्रौढ़ता करते हैं किंतु गहनता से देखने से यह भली-भांति नज़र आ जाता है कि इसके अधीन चौथे वर्ग (तथाकथित) शूद्र की हालत इतनी बुरी थी कि वह अन्य तीन वर्गों का गुलाम-मात्र ही था। भारतवासियों की इसी अंदरूनी गुलामी ने विदेशी हमलावरों को भारत पर कब्ज़ा करने में कोई कठिनाई न आने दी। एक-दूसरे को गुलाम बनाते सभी भारतवासी खुद ही विदेशी गुलामी के अंधेरे कूप में जा गिरे। विदेशी हाकिमों ने हमलावर बनकर भारतवासियों को बड़ी बेरहमी से मारा, उजाड़ा, लूटा व पीटा। वे यहां से अथाह दौलत लूटकर अपने देश में ले जाते; भारत की बहू-बेटियों को अपने देश में मंडी लगाकर बेचते। भारतवासियों ने इन विदेशी हाकिमों की गुलामी को अपनी तकदीर ही मान लिया। धीरे-धीरे गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतवासियों की हालत बद से बद्तर होती चली गई। सख़्तियों का दौर और तेज होता गया। भारतवासियों अपने मानवीय मौलिक अधिकारों से लगभग वंचित ही कर दिया गया। इनसे इज्जत से जीने के सभी अधिकार छीन लिए गए। भारतवासियों के सिरों पर पगड़ी बांधने, पालकी में तथा घोड़े पर बैठने आदि पर भी पाबंदी लगा दी गई। यहां तक कि इनको अपना धर्म निभाने के लिए भी कई तरह के टैक्स (ज़जिया) अदा करने पड़ते। ये पाबंदियां दिन-ब-दिन इतनी सख़्त होती जा रही थीं कि लोग अपना मत छोड़कर इसलाम धर्म धारण करने के लिए मज़बूर हो रहे थे।

लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष की गुलामी के बाद इस देश के लोगों को आज़ादी का सुख प्राप्त हुआ। असल में आज़ादी की लड़ाई श्री गुरु नानक देव जी ने आरंभ की थी। प्रसिद्ध शायर इकबाल ने इस हकीकी सच को अपनी रचना में बयान करते हुए बड़े भावपूर्ण शब्दों में कहा है कि *"फिर उठी आखिर सदाअ, तौहीद की पंजाब से। हिंद को इक मर्द-ए-कामिल ने, जगाया ख्वाब से।"* श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय के रज़वाड़ों के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद करते हुए कहा था कि *"राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥"* श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त रविदास जी, भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त शेख फरीद जी की आवाज़ को भी बुलंद किया तथा उनके द्वारा

Final

उच्चरित समाज का मार्गदर्शन करने वाली बाणी को एकत्र कर द्वितीय गुरु साहिब को विरासत के तौर पर सौंप दिया। श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी ढंग से जुलम का मुकाबला करते हुए लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने पूर्व गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित एवं एकत्रित बाणी को श्री आदि ग्रंथ साहिब के रूप में संपादित कर मनुष्य-मात्र को इससे ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। ज़ालिम हकूमत ने उनको हद दर्जे की यातनायें देकर शहीद कर दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए जनता में आध्यात्मिकता के साथ-साथ राजनीतिक शक्ति पैदा करने के लिए 'मीरी-पीरी' का सिद्धांत कायम किया; समय की सरकार के साथ टक्कर लेते हुए अनेक युद्ध किए। इन सभी युद्धों का उद्देश्य जनसाधारण को अपनी आज़ाद हस्ती के अस्तित्व का एहसास कराना भी था। नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय तक हालात ऐसे हो गए थे कि हर किसी को धर्म परिवर्तित किये जाने को विवश किया जाने लगा। अपने-अपने धर्म में जीने की आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में अपने प्रमुख सिक्खों सहित शहादत देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना कर आज़ादी की लड़ाई को और मज़बूत किया। खालसे ने हर जुल्म का डटकर मुकाबला किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आशीर्वाद देकर अपने प्रमुख सिक्खों के साथ पंजाब की धरती को ज़ालिम राज्य से आज़ाद करवाने के लिए भेजा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने ज़ालिमों को सबक सिखाकर पंजाब की धरती पर पहली बार आज़ाद राज्य कायम किया। हमलावर चाहे फिर भी भारतवासियों को लूटने की मंशा से आते रहे किंतु पंजाब के शूरवीरों से मुंह की खाकर वापिस मुड़ते रहे। १२ मिसलों के खालसाई राज्य तथा राखी सिस्टम ने आज़ादी की चिंगारी छेड़ दी थी, जिसकी बदौलत देशवासियों का अपना राज्य 'सिक्ख राज्य' कायम हुआ था। इस सब कुछ का आधार श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान द्वारा बख़्शा हुआ गुरमति फ़लसफ़ा ही था।

तत्पश्चात अंग्रेजों की आमद हुई और उन्होंने भारत पर अपना शासन जमाना शुरू कर दिया था। यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि पंजाबवासियों ने दूसरों के मुकाबले बहुत कम समय गुलामी को सहन किया। मुगलों के बाद देश-कौम की आज़ादी छीनने वाली दुनिया की सबसे चालाक मानी जाती कौम अंग्रेज ही थी। अंग्रेजों से भारत को आज़ाद करवाने के लिए जिन देशवासियों ने संघर्ष की नींव रखी उनकी दासतान पंजाबियों, खासकर नानक-नाम-लेवा सिक्खों के ज़िक्र के बिना अधूरी है। सरदार शाम सिंघ अटारी, महारानी ज़िंदां, बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी, भाई महिराज सिंघ का योगदान एवं कुर्बानी वर्णनयोग्य है। अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग लहर सबसे पहले सिक्खों ने ही

Final

चलायी। जनरल मोहन सिंघ आज़ाद हिंद फौज के बुनियादी संस्थापकों में से एक वर्णनयोग्य सिक्ख शख़्सियत हैं। बहुत ही कम संख्या में होने के बावजूद भी सिक्खों की कुर्बानियों की प्रतिशतता को देखकर इतिहासकार वाह-वाह कर उठते हैं। अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा छीने गए सर्वकल्याणकारी खालसा राज्य को पुन: कायम करने के लिए यथासंभव प्रयास किए गए। चाहे इन प्रयासों का तत्काल कोई फल प्राप्त नहीं हुआ था मगर इन प्रयासों के लिए जो इतिहास सृजित किया गया वो आने वाले स्वतंत्रता संग्रामियों के लिए अवश्य प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हुआ। पंजाब-निवासी नानक-नाम-लेवा सिक्खों ने देश को आज़ाद करवाकर ही दम लिया और इसका इनको आज़ादी वाले दिन ही भारी हर्जाना भी भरना पड़ा। जब १५ अगस्त, १९४७ ई को सारा देश आज़ादी का जश्न मना रहा था, उस समय पंजाब-निवासी अपने जान से प्यारे पंजाब के हुए टुकड़ों का दुख अपने नग्न तन पर झेल रहे थे। उनको उनके जान से प्यारे गुरुद्वारा साहिबान से बिछोड़ा जा रहा था। वे कत्लोगारत का शिकार होकर अपने परिवारों से बिछड़ रहे थे; घर से बेघर होकर अपने परिवारों के लिए सुरक्षित जगह ढूंढ रहे थे।

आज़ादी के बाद कुछ समय व्यतीत होने पर सिक्खों द्वारा दी कुर्बानियों को भुलाकर इनको दूसरे दर्जे के शहरी होने का एहसास करवाने के लिए कृतघ्नता वाली प्रक्रिया शुरू कर दी गई। हक-सच की लड़ाई आज भी सिक्खों द्वारा जारी है और ये शांतमयी ढंग से देश की मुख्य धारा से जुड़े रहकर अपना रोष प्रकट करते आ रहे हैं। राज्य-गद्दी का सुख भोग रहे सियासतदानों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि वे सिक्खों द्वारा अपनी जानें वारकर महंगे मूल्य ली आज़ादी के कारण ही आज राज्य-सत्ता का सुख ले रहे हैं। आओ! अपने शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धा का इज़हार करते हुए उनका पूर्ण सत्कार करें, उनके द्वारा छोड़े पद-चिन्हों पर चलते हुए हमेशा हक-सच की आवाज़ बुलंद करें, ताकि वे हमारे लिए सदैव प्रेरणा-स्रोत बने रहें, तभी हम हमेशा के लिए आज़ादी का आनंद तथा राज्य-सत्ता का सुख प्राप्त करते रह सकते हैं।

Final

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी की संपादना

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख धर्म का पूज्य ग्रंथ है। इसमें निहित शबद, उपदेश, महान गुरु साहिबान की पावन बाणी ही सिक्खों का गुरु है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परम ज्योति में लीन होने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिबको गुरुआई सौप कर इस सत्य बाणी को ही गुरु मानने का आदेश दिया। मूलत: यह समग्र मानवता का पथ-प्रदर्शक ग्रंथ है। अकाल पुरख परमात्मा से जुड़ने का साधन निर्देश करने वाली यह सत्य बाणी किसी एक वर्ग, किसी एक संप्रदाय व जाति विशेष के लिए नहीं है। इस सत्य बाणी में गुरु साहिबान और अन्य भक्तजन महापुरुषों के स्वानुभूत सत्य की अभिव्यंजना हुई है। ये अनुभव सार्वकालिक हैं, सार्वभौमिक हैं और युगों-युगों तक समूची मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। सांझा उपदेश है--*"खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥"* यह पावन बाणी कुल मानवता को भ्रातृ-भाव, प्रेम, सहानुभूति, करुणा, मैत्री, सहृदयता, सेवा, परोपकार, त्याग और बलिदान जैसे महान दिव्य नैतिक गुणों की ओर प्रेरित कर उसे अच्छा इंसान और स्वस्थमना उत्तरदायी संभ्रांत नागरिक बनाती है।

पवित्र बाणी का संपादन, संकलन पांचवे पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने किया। श्री अमृतसर में रामसर सरोवर के किनारे एकांत, शांत एवं सुरम्य स्थल पर बैठकर इसका लेखन-कार्य विद्वान लिखारी भाई गुरदास जी द्वारा करवाया। वर्षों के कठिन श्रम, लगन एवं उच्च कोटि की संपादन-कला-सक्षमता के परिणामस्वरूप इसका संपादन-कार्य सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ। भादों सुदी पहली को इसका प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया। बाबा बुड्ढा जी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला ग्रंथी नियुक्त किया गया। शुरू में इसे 'पोथी साहिब' कहा गया, बाद में 'बीड़ साहिब' कहा जाने लगा और जब दसवें गुरु साहिब ने अपने पिता नौवें गुरु साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा रची बाणी को इसमें स्थान दिया और भाई मनी सिंघ जी द्वारा इसका पुनर्लेखन करवाया तब यह विशालकाय बाणी-संग्रह 'ग्रंथ साहिब' कहा जाने लगा। जब गुरु साहिब ने इसे *"सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ"* आदेश कर इसे गुरु-पद पर प्रतिष्ठित किया तब यह 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के रूप में पूज्य हुआ।

श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी के अतिरिक्त १२वीं शती से लेकर १७वीं शती तक के १५ प्रमुख महापुरुषों भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त बेणी जी, भक्त सधना जी, भक्त सैण जी, भक्त भीखण जी, भक्त धंना जी, भक्त पीपा जी, भक्त जैदेव जी, भक्त परमानंद जी, भक्त शेख़ फरीद जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सूरदास जी की बाणी शामिल है। इसमें ग्यारह भट्ट साहिबान-- भट्ट कल सहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट सल जी, भट्ट भल जी, भट्ट नल जी, भट्ट मथरा जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट

**१८०१-सी, मिशन कम्पांऊड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी)-२४७००१, फोन : ९४१२४-८०२६६*

Final

भिखा जी, भट्ट बल जी, भट्ट हरिबंस जी की बाणी के अलावा भाई सत्ता जी, भाई राय बलवंड जी की वार; श्री गुरु अमरदास जी के पड़पौत्र बाबा सुंदर जी की 'सदु' बाणी तथा भाई मरदाना जी के नाम वाले बिहागड़ा राग में तीन सलोक हैं।

पंचम गुरुदेव जी ने बाणी का जो संकलन तैयार किया वह ९७४ पन्नों का बना। मूल बाणी-संग्रह को लेकर जब कई तरह के विवाद होने लगे तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी ने तीन विद्वानों-- भाई जोध सिंघ, प्रो. तेजा सिंघ और प्रो. गंगा सिंघ को नियुक्त किया, जो अक्तूबर, १९४५ ई. को करतारपुर गए और उन्होंने वहां रखी मूल बीड़ के दर्शन किए, रिपोर्ट दी। भाई जोध सिंघ ने 'करतारपुरी बीड़ दे दर्शन' और 'प्राचीन बीड़ां बारे' अपनी पुस्तकों में बताया है कि करतारपुर में रखी सुरक्षित बीड़ ही श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित मूल प्रति है। इसमें बीच-बीच में 'सुधु कीचै' और 'सुधु' जैसे गुरु साहिब के अपने हस्तलिखित संकेत हैं। इसमें रागमाला भी है जिसका अंक ततकरा में ९७४ है। संपूर्ण बाणी एक ही हाथ की लिखाई है। अत: निर्णय लिया गया कि यही ९७४ पन्नों की बीड़ मूल बीड़ है।

जब प्रश्न उठा कि श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी का संपादन क्यों किया, तो इस सम्बंध में विद्वान इतिहासकारों ने कई प्रकार के तर्क दिए। सर्वप्रमुख तो 'तवारीख गुरू खालसा' के लेखक ज्ञानी गिआन सिंघ ने गुरु दरबार में सिक्खों द्वारा की गई प्रार्थना बताया। 'पुरातन बंसावलीनामा' के लेखक भाई केसर सिंघ (छिब्बर) ने गुरु जी के बड़े भाई प्रिथीचंद द्वारा कच्ची बाणी की रचना और उसका श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के साथ मिलाकर कीर्तन-गायन करना बताया। प्रिथीचंद गुरगद्दी न मिलने से नाराज़ था। वो अलग गद्दी बनाने के प्रयत्न में था। उसका बेटा मिहरबान कविता करने लगा था। अंत में 'नानक' नाम जोड़ देता था।

मिहरबान पुत्त प्रिथीए दा कबीसरी करे।
पारसी हिंदवी सहसक्रित नाले गुरमुखी पढ़े।
तिन भी बाणी बहुतु बणाई।
भोग गुरू नानक जी दा ही पाई ॥८७॥. . .

जब यह बात श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंची तो उन्होंने 'धुर की बाणी' अलग चुनकर इसका संग्रह तैयार करने की बात सोची। भाई गुरदास जी से बाणी लिखवाई। इससे पूर्व वे अपनी उच्चरित बाणी विद्वान लिपिक भाई संतराम, भाई हरीआ, भाई सुखा और भाई मंसाराम से लिखवाया करते थे। इसे भी संग्रह में जोड़ दिया। *"तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ"* के अनुसार उनमें बाणी को गुरमति की कसौटी पर परखने की योग्यता जन्मगत रूप से प्रत्यक्ष प्रकट थी। वे स्वयं उच्च कोटि के गायक, राग-नाद-संगीत के पारखू एवं सुलभ कोमलता से सम्पन्न कोमल हृदय प्रभु-प्रेमी थे। उन्होंने स्वयं अति चरम कोटि की कलात्मकता साहित्यकता, गहन भावानुभूति और भाव विह्वलता सम्पन्न गुरबाणी का उच्चारण किया। वे श्री गुरु नानक देव जी व अपने पूर्व गुरु साहिबान की उच्चरित बाणी का भली-भांति महत्त्व व मूल्य प्रतिपादित करना जानते थे। वे इस अनमोल विरासत को सुरक्षित पंथ के पास आगामी पीढ़ियों के हाथों में पहुंचाना चाहते थे। उन्होंने इसीलिए बाणी को संगृहीत कर दिया। वे जानते थे कि मौखिक रूप से इस महत थाती के गुम हो जाने की संभावना है। अन्य परोपकार-कार्यों के साथ-साथ उन्होंने अमृतमयी बाणी को भी श्रद्धालु सिक्खों तक सुरक्षित पहुंचाने की आवश्यकता समझी। अनमोल बाणी का संकलन-संपादन उनकी अपनी अंत:प्रेरणा

Final

का प्रतिरूप है।

सिक्ख धर्म-चिंतन का मूल 'शबद' है। 'गुरु' ही 'शबद' है और 'शबद' ही 'गुरु' है। 'शबद' प्रभु का नाम है। परमात्मा, अकाल पुरख, पारब्रह्म का यश-कीर्ति-गायन सिक्ख मत का मूल सिद्धांत है। गायन सच्ची बाणी का करना है जो गुरु-मुख से निसृत है। गुरु-मुख से निकली बाणी का सीधा संबंध परमात्मा के चिंतन से जुड़ा है। गुरु नानक पातशाह की सुरति जब अकाल पुरख वाहिगुरु से जुड़ जाती, तो गहन तल्लीनता व तदात्म एकता की अवस्था में उनके नेत्र मुंद जाते, बाणी का स्फुरण होता। भाई मरदाना जी को आदेश होता, "मरदानिआ! रबाब वजा, बाणी धुरों आई ए।" जब गहन तल्लीनता की अवस्था में गुरु साहिब के मधुर कंठ से शबद गुंजायमान होते तो मानव मन तो क्या, उड़ते पंखेरू भी पर समेट टिक जाते; चलायमान जीव, जंतु, पशु सभी स्थिर हो जाते; चल-अचल तत्वों की गति अवरुद्ध हो जाती; संपूर्ण वातावरण मधुमय हो उठता; असीम शांति, शीतलता, स्थिरता, सुकून का माहौल बन जाता। जीव-मात्र को ऐसा आत्मसुख, सुकून और शांति प्रदान करने वाला यह रस का भंडार क्या यूं ही बिखेर दिए जाने वाला था? श्री गुरु अरजन देव जी की दूरदृष्टि ने मानव-कल्याण हेतु रस की इस प्रवहमान् मंदाकिनी को मोहरबंद कर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी की भी ऐसी ही इच्छा थी। अपनी धर्म-प्रचार की यात्राओं के दौरान उन्होंने धर्म की अधोगति देखी थी। ब्राह्मण, मुल्ला, योगी पाखंडवाद में जनता को उलझा रहे थे। उसके विरोध में उन्होंने जिस निर्मल साधना-मार्ग का निर्देशन किया वे सारे तथ्य बाणी में ही तो संकलित थे, जो पोथी रूप में उन्होंने *"सहि टिका दितोसु जीवदै"* श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी सौंपने के साथ सौंपे थे। हाथ में ज्ञान की खड्ग पकड़ाई थी, *"गुरि चेले रहरासि कीई"*, *"लंगरु चलै गुर सबदि"* का आदेश दिया था। पोथी को संभालना जरूरी था इसलिए श्री गुरु अंगद देव जी ने 'गुरमुखी' लिपि को संयोजित किया, गुरबाणी के गुटके तैयार किए, जन्म-साखी लिखवाई, जिससे गुरु नानक-पंथ की बाणी, जीवन और सिद्धांत जीवित रहें। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों को आदेश दिया--*"आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥"* गुरु द्वारा बख़्शी बाणी ही सच्ची बाणी है और तो कच्ची बाणी है। कच्ची बाणी वह थी जो उस समय तक कई काव्य रचना करने वालों ने 'नानक' नाम से रचनी शुरू कर दी थी। श्री गुरु अमरदास जी के आदेशानुसार सच्ची बाणी को संभालना जरूरी था, जो पंचम पातशाह ने किया। फिर इस समय तक नानक-नाम-लेवा श्रद्धालुओं की संख्या भी बढ़ रही थी। भारत से बाहर सुदूर स्थानों तक सिक्ख फैल रहे थे। उन तक शुद्ध रूप में गुरु नानक-पंथी सिद्धांतों को पहुंचाने का एक मात्र जरिया बाणी-संकलन था जो पंचम पातशाह ने सोचा। जब श्री गुरु नानक देव जी ने एक न्यारे धर्म-चिंतन के साथ निर्मल पंथ की संस्थापना की तो इसके पास न्यारे धर्म-चिंतन की व्याख्या करने वाला अपना साहित्य होना भी तो जरूरी था। हिंदुओं के वेद, पुराण, स्मृति, शास्त्र-ग्रंथ थे। इसलाम के पास कुरान था। सिक्खों का गुरमति संप्रक्त धर्म-ग्रंथ का होना अनिवार्य था। इन्हीं सभी तथ्यों को दृष्टि में रख पंचम पातशाह ने मानवता को यह अनमोल तोहफा 'बाणी का बोहिथ' भेंट किया। मानवता गुरुदेव जी की चिर ऋणि रहेगी।

अब बाणी-प्राप्ति के स्रोतों को लेकर इतिहासकारों ने मत प्रकट करने प्रारंभ किए। अपने-अपने मतानुसार कई प्रकार के मुमामले प्रस्तुत किए। सबसे पहले ज्ञानी गिआन सिंघ ने

Final

तर्क दिया जिसकी पुष्टि एम. ए. मैकालिफ़ ने भी की। अंग्रेज विद्वान अरनेस्ट ट्रंप ने कहा कि जब गुरु साहिब का संकलन को मन बना तो उन्होंने भक्तों, सेवकों, सिक्खों के पास रखी बाणी इकट्ठी की। ज्ञानी गिआन सिंह ने बताया कि सभी सेवकों-शिष्यों को आज्ञा-पत्र भेजे गए कि जिसके पास जो बाणी है, लेकर आए। इसमें भाई बखता एक बहुत भारी ग्रंथ उठाकर लाए, जिसे एक व्यक्ति तो उठा ही नहीं सकता था। इसमें पूर्व चार गुरु साहिबान और अनेक संतों-महात्माओं की बाणी थी। गुरु जी ने उसमें से पूर्व चार गुरु साहिबान की बाणी के अलावा अन्य उचित लगी बाणी छांट ली, बाकी उसे वापिस कर दी। यह ग्रंथ अब भी भाई बखता की संतान के पास है। इसी संदर्भ में मैकालिफ़ और ज्ञानी गिआन सिंघ बाबा मोहन जी (श्री गुरु अमरदास जी के सुपुत्र) के पास रखी पोथियों की भी बात करते हैं जिन्हें देने से पहले बाबा मोहन जी ने इनकार कर दिया था। बाद में श्री गुरु अरजन देव जी स्वयं गए। बाबा जी ने पोथियां गुरुदेव जी को दे दीं। इसी तरह आज्ञा-पत्र की बात सुन बहुत-से भक्त आए। उनकी जो बाणी गुरु साहिब को ठीक लगी, लिख ली गई। भक्त साहिबान की बाणी के बारे में भी इसी तरह का भ्रम पैदा किया गया। प्रो. जी. बी. सिंघ अपनी पुस्तक 'प्राचीन बीड़ां बारे' में बाबा मोहन जी के पास रखी पोथियों और भक्तों की बाणी का ज़ोरदार समर्थन करते हैं और यहां तक बताते हैं कि बाबा प्रेम सिंघ जी होती मरदान, जो गोइंदवाल साहिब में भल्ले बाबाओं के परिवार से हैं और श्री गुरु अमरदास जी की १४वीं पीढ़ी से हैं, ने इन पोथियों के दर्शन किये हैं। वे डॉ. मोहन सिंघ से अपने पत्र-व्यवहार का भी ज़िक्र करते हैं, जिन्होंने इन पोथियों के दर्शन प्रत्यक्ष किए हैं। इसमें श्री गुरु नानक साहिब की लगभग सारी बाणी है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है। इनका कहना है कि गुरु साहिब ने भाई पैड़ा जी को लंका द्वीप भेजकर प्राणसंगली भी मंगवाई, पर उस बाणी को ग्रंथ साहिब में संकलित नहीं किया। भक्तों की बाणी कुछ बाबा मोहन जी के पास रखी पोथियों से और कुछ उनके शिष्यों व (जीवित) संबंधियों से प्राप्त की। उत्कृष्ट विद्वान एवं शोधकर्ता प्रो. साहिब सिंघ ने इन सभी मतों का खंडन किया है।

गुरबाणी की अंदरूनी बनावट, शबदों की भाषा-शैली-रचना के आधार पर, अत्यंत तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक और व्याकरण नियमों के आधार पर उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि गुरु नानक पातशाह ने अपने जीवन-काल में ही स्वयं उच्चरित बाणी की पोथी तैयार कर ली थी। श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी प्रदान करने के समय यह बाणी की पोथी उन्हें सौंपी गई। इसी क्रम में श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी बाणी और पहली पोथी श्री गुरु अमरदास जी को सौंपी। श्री गुरु अमरदास जी ने स्वयं की बाणी समेत पूरी पोथी श्री गुरु रामदास जी को दी। चौथे गुरु साहिब ने अपनी प्रेम विगलित उच्चरित बाणी पूर्व बाणी सहित श्री गुरु अरजन देव जी को दी। इसे देख गुरु जी का हृदय भावविभोर हो उठा और गद्‌गद् कंठ उन्होंने कहा :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥रहाउ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥ *(पन्ना १८५)*

भाई गुरदास जी गुरु नानक साहिब की बगदाद-फेरी के दौरान काजी, मुल्ला-मौलवियों

Final

द्वारा पोथी में से सवाल पूछे जाने की बात कहते हैं--*"पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई?"* यह पोथी निश्चय ही गुरु साहिब द्वारा उच्चरित बाणी-संग्रह था जो *"आसा हत्थ किताब कच्छ"* गुरु जी के पास थी।

डॉ. साहिब सिंघ तर्कपूर्ण ढंग से बताते हैं कि बाणी-उच्चारण के समय गुरुओं के पास उनके पूर्व गुरु की बाणी मौजूद थी, तभी तो अनेक शबदों की शब्द-चयन-शैली, लिखने का ढंग, विचार एक जैसे हैं। कई महावाक तो लगभग एक जैसे हैं। यदि उनमें महला १,२,३,४ आदि संकेत न दिए होते तो निश्चय कर पाना कठिन था कि यह किस गुरुदेव जी की बाणी है। बाणी को रागों में निबद्ध करना और उनमें छंद, लय, ताल, शब्द, लेखन-शैली और भाव-साम्य का होना कोई इत्तफाक नहीं है। फिर कई तो अत्यंत गहन विचार प्रधान लंबी बाणियां हैं। 'सिध गोसटि', 'दखणी ओअंकार', 'अनंदु', बीस-बीस पदों की लंबी 'असटपदियां', 'सोलहे' आदि ऐसी बाणियां हैं जो गुरु साहिब ने शांत-एकांत स्थान पर बैठकर उच्चरण की होंगी और बाणी को संभाल-सहेजकर रखा होगा।

डॉ. साहिब सिंघ इसी प्रकार का तर्क भक्त साहिबान की बाणी के सम्बंध में भी देते हैं। श्री गुरु नानक देव जी अपनी यात्राओं के दौरान जहां-जहां गए उस क्षेत्र से सम्बंधित भक्तों की बाणी अपने विचारों से मेल खाती एकत्रित की। उसे सरल पंजाबी भाषा में लिखा और श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दिया। इस सम्बंध में डॉ. साहिब सिंघ बाबा फरीद जी के सलोकों से उदाहरण भी देते हैं जो अनेक सलोक श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने उनके प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए हैं। शंका निवारण हेतु अनेक सलोक भी दिए हैं। बाबा मोहन वाली घटना भी वे निर्मूल मानते हैं। *"मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा"* छंत बाबा मोहन जी की प्रशस्ति में नहीं गायन किया गया, यह केवल अकाल पुरख वाहिगुरु की प्रशस्ति में हैं। इसी राग गउड़ी में पहले छंत श्री गुरु नानक देव जी के और फिर श्री गुरु अमरदास जी के संकलित हैं। संकलन क्रम में फिर श्री गुरु अरजन देव जी के छंत हैं जिनमें परमपिता पारब्रह्म की प्रशस्ति है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य बाणी में किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा को स्थान नहीं दिया गया है। भाई बखता के भारी ग्रंथ की घटना भी मनघड़त है।

पहली बात यह कि भाई बखता ने बाणी एकत्र कैसे की? उन तक बाणी पहुंची कैसे? क्या वे गुरुओं के पास रहकर बाणी लिखते रहे? यदि वे चार गुरु साहिबान के पास रहकर बाणी लिखते रहे तो पांचवे गुरु के समय वहां से चले क्यों गए? गुरु-घर की सन् १५२१ से १५८१ तक लंबी सेवा करने के एवज़ में उनका आदर-सत्कार होना चाहिए था। सिक्ख इतिहास में ऐसा क्यों नहीं हुआ? इन तर्कों पर डॉ. साहिब सिंघ भाई बखता की कथा को कपोल कल्पित मानते हैं और निष्कर्ष देते हैं कि यह महान पावन सच्ची बाणी गुरु साहिबान से परंपरा में होती हुई श्री गुरु अरजन देव जी को प्राप्त हुई जिसको उन्होंने अपनी अद्भुत संपादन-कला, कुशलता से कुल मानव-कल्याण हेतु अनुपम उपहार के रूप में मानवता को भेंट किया। युगों-युगों तक यह पावन ग्रंथ मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। वर्तमान में भी यह प्रेम और विश्व-शांति का संदेश दे रहा है।

Final

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १२१

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

'धुर की बाणी' अमृतमयी इलाही बाणी के सृजनकर्त्ता श्री गुरु नानक पातशाह का ५५० वर्षीय प्रकाश पर्व सारा जगत बड़े हर्षोल्लास, श्रद्धा-भावना एवं अत्यंत प्रेम-भाव के साथ मना रहा है। श्री गुरु नानक देव जी (१४६९-१५३९ ई) की पावन बाणी को विद्वानों ने अनेक भागों में विभक्त किया है। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) ने गुरु जी की बाणी को चार प्रमुख भागों में विभक्त किया है :

१. वृहदाकार बाणी
२. लघ्वाकार बाणी
३. वार बाणी
४. फुटकर बाणी (सलोक आदि)

वृहदाकार अर्थात् बड़े आकार की बाणियों में जपु जी साहिब, सिध गोसटि, ओअंकार, पटी, बारह माहा, थिति आदि प्रमुख हैं। इन प्रमुख बाणियों में से जपु जी साहिब और नितनेम की बाणियों की विचार-व्याख्या (गुरबाणी चिंतनधारा . . . १-१२०) 'गुरमति ज्ञान' विश्व-विख्यात पत्रिका में प्रकाशित होने का सौभाग्य प्रभु-कृपा के फलस्वरूप प्राप्त हुआ यह सब इस पत्रिका के प्यारे पाठकों एवं शुभचिंतकों से मिले स्नेह एवं अपनत्व का परिणाम है। पाठकों की आशीष की बदौलत तथा श्री गुरु नानक पातशाह की अपार कृपा-दृष्टि से गुरु पातशाह की महान बाणी 'सिध गोसटि' की विचार-व्याख्या करने का अदना-सा प्रयास गुरु पातशाह की आगमन शताब्दी को समर्पित, गुरु पातशाह के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम कर प्रारंभ करते हुए समस्त पाठकों से पुन: पहले जैसे स्नेह एवं आशीर्वाद की कामना करती हूं।

सिध गोसटि : संक्षिप्त परिचय : कलयुगी जीवों का उद्धार करने हेतु श्री गुरु नानक पातशाह ने चार महान धर्म-प्रचार यात्राएं कीं, जिन्हें 'चार उदासियां' नाम से जाना जाता है। सत्य की राह दिखाने, सचिआर बनने की युक्ति सिखाने और समूची मानवता से संवाद रचाने हेतु श्री गुरु नानक पातशाह ने *"जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥"* का उपदेश दिया।

संवाद (आपसी वार्तालाप) के माध्यम से परिवार, समाज, देश ही नहीं, बल्कि संसार की किसी भी समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी ने जब धार्मिक यात्रा प्रारंभ की, इस दौरान उनकी मुलाकात विविध धार्मिक लोगों से हुई। मध्यकालीन समाज में योगी प्रमुख वर्ग था। डॉ. जोध सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब (मूल पाठ एवं हिंदी) अनुवाद के परिशिष्ट-५ में योगियों के साथ हुई गोष्ठि का विवरण दिया है। उनके चिंतनानुसार भारतीय जनजीवन पर योगियों का विशेष प्रभाव था। श्री गुरु नानक देव जी की योगियों से पेशावर के पास गोरख हटड़ी, पंजाब के गुरदासपुर जिले में अचल बटाला, उत्तर प्रदेश के गोरखमता, जो आजकल 'नानकमता' नाम से जाना जाता है और सुमेर पर्वत श्रृंखला में बैठे हुए, पहुंचे

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

Final

हुए योगियों से विशेष मुलाकातें हुई। बाणी 'सिध गोसटि' जहां एक ओर योग क्रियाओं का सम्पूर्ण लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है वहीं इसके मूल पाठ और इसमें वर्णित चरपट लोहारीआ आदि सिद्धों के नामों के कारण इसे सुमेर पर्वत पर सिद्धों के साथ हुई वार्ता का सारांश माना जा सकता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ९३८ से ९४६ तक यह पावन बाणी सुशोभित है, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी ने सिद्धों के सिद्धांतों को समझा और बड़े अदब-सत्कार से अपने सिद्धांतों को समझाया कि व्यक्ति को संसार में विचरण करते हुए संसार का बन कर रहना चाहिए। सिद्धों ने जब श्री गुरु नानक देव जी से मातृलोक का हालचाल पूछा तो श्री गुरु नानक देव जी ने इस संदर्भ में सिद्धों को सटीक जवाब दिया, जिसका वर्णन भाई गुरदास जी ने बड़े सुंदर एवं सार्थक शब्दों में किया है। श्री गुरु नानक पातशाह ने सिद्धों से कहा कि आप जैसे सिद्ध पुरुष तो जीवन की सच्चाइयों से मुंह मोड़कर यहां कंदराओं में आ बैठे हैं तो फिर धरती पर आम जनता का मार्गदर्शन कौन करेगा? कहने से तात्पर्य, श्री गुरु नानक देव जी हठयोगियों को दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले तो मानते हैं; उनके जात-पांत संबंधी क्रांतिकारी विचारों की उपेक्षा भी नहीं करते; उनकी लंगर-पद्धति सब कुछ अच्छा होते हुए भी उनके गुणों एवं शक्ति का समाज एवं मानवता के हित में प्रयोग न होना उचित नहीं मानते। बस, यही तथ्य गुरु जी सिद्धों को समझाना चाहते थे।

योगियों की अनेक गोष्ठियां श्री गुरु नानक साहिब के साथ हुईं। प्रत्येक गोष्ठि में योगियों ने करामातें दिखाकर श्री गुरु नानक साहिब को प्रभावित करने का प्रयास किया, लेकिन हर बार गुरमति की श्रेष्ठता के समक्ष उन्हें झुकना पड़ा। एक गोष्ठि में चर्चा इतनी लंबी चली कि उसमें गुरु जी के मुखारबिंद से जिस बाणी का उच्चारण हुआ उस बाणी को 'रामकली राग' में 'सिध गोसटि' कहते हैं।

'गोसटि' शब्द के भावार्थों की व्याख्या करते हुए प्रो. पिआरा सिंघ 'पदम' लिखते हैं :-

"गोसटि अर्थात् गोष्ठि का अर्थ है-- बहस या विचार-चर्चा, संवाद। यह एक प्राचीन साहित्य का रूप है जिसमें कोई मसला प्रश्नोत्तर के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। प्राचीन हिंदी और पंजाबी साहित्य में कई गोष्ठियों का वर्णन मिलता है, जिसमें तार्किक पक्ष से कई आध्यात्मिक सिद्धांतों तथा धार्मिक विश्वासों की परख एवं पड़ताल की गई है, जैसे कि सिद्ध-साहित्य में महादेव गोरख गोष्ठि, गोरख गणेश गोष्ठि, गोरख दत्त गोष्ठि आदि। भारतीय दार्शनिक साहित्य में इसकी परंपरा मौजूद है। पुराने शास्त्रों में एक आम रीति प्रचलित रही है कि किसी गंभीर मसले पर वादी, प्रतिवादी नियुक्त कर शंकाएं खड़ी की जाती हैं और फिर उनका समाधान किया जाता है। शंकावादी आम तौर पर किसी मसले के बारे में वही प्रश्न उठाता है, जो उठाये जा सकते हैं और बुद्धिमान आचार्य उन शंकाओं को दूर करके अपना मत पेश करता है।" *(खोज पत्रिका, नवंबर १९६९, पृष्ठ १३९)*

'सिध गोसटि' बाणी में योगियों के समस्त गूढ़ प्रश्नों के उत्तर अत्यंत तर्कपूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिए गए हैं। गुरु साहिब के ईश्वरीय ज्ञान, चिंतन द्वारा अत्यंत सटीक उत्तर एवं गुरमति सिद्धांतों को सुंदर शैली में अभिव्यक्त करने की कला से अड़ियल तथा हठी स्वभाव वाले योगी भी गुरु साहिब की बाणी के वशीभूत हो गुरमति के

Final

धारक हो गए। पहली प्रचार-यात्रा के दौरान योगियों के साथ हुई ज्ञान-चर्चा के कारण ही 'गोरखमता' नामक स्थान का नामकरण 'नानकमता' हो गया था।

प्रस्तुत बाणी में श्री गुरु नानक पातशाह ने 'गुरमुख' नामक आदर्श व्यक्ति की संकल्पना की है और उसके गुणों का वर्णन पद संख्या २७ से ४२ तक में किया है। साथ ही इस बाणी में शरीर को साधने की बजाय मन को साधने की युक्ति बताई गई है, जो शबद-गुरु को हृदय में बसाने से ही मुमकिन हो सकती है। इस बाणी में गुरु साहिब ने नैतिक मूल्यों में सर्वोपरि मूल्य 'सत्य' को अपनाने का निर्देश दिया है। इसके लिए पहले व्यक्ति को सांसारिक व्यवहार में सत्य को अपनाना होगा, तभी वह परम सत्य का साक्षात्कार करने में सफल होगा।

'सिध गोसटि' बाणी का केंद्रीय भाव 'रहाउ' की पंक्ति में समाहित है :

किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥
साच सबद बिनु मुकति न होइ ॥

अर्थात् गृहस्थ छोड़ने से कोई लाभ नहीं। गृहस्थ छोड़ कर अथवा त्याग कर कोई पवित्र नहीं हो जाता और न ही इस प्रकार माया के बंधनों से मुक्ति मिलती है। वास्तव में प्रभु की स्मृति में जुड़ने से ही मन पवित्र होता है। जब तक परमेश्वर की भक्ति में मन का जुड़ाव न हो तब तक माया के बंधनों एवं इसके त्रिगुणी प्रभाव और आकर्षण से मुक्ति संभव नहीं। समूची 'सिध गोसटि' बाणी में इसी केंद्रीय भाव की विशद व्याख्या है।

श्री गुरु नानक पातशाह ने तपते हृदयों में अमृतमयी बाणी की बरसात कर उन्हें व्यर्थ के कर्मकांडों, आडंबरों, भ्रमों से मुक्त कर शांति, सकून, प्यार और आनंद से भरपूर परोपकारी जीवन जीने की कला सिखाई; समूची मानवता का मार्गदर्शन किया। भाई गुरदास जी ने इस तथ्य को इस प्रकार उजागर किया है :

बाबा देखै धिआनु धरि जलती सभि प्रिथवी दिसि आई।
बाझु गुरू गुबारु है, है है करदी सुणी लुकाई।
बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई ॥ (वार १:२४)

इस प्रकार भूली-भटकी मानवता का मार्गदर्शन करने हेतु श्री गुरु नानक पातशाह ने भारत सहित अनेक देशों का भ्रमण किया। अपने प्रचारक दौरों के दौरान गुरु जी का विविध धर्मों के अग्रणी लोगों से विचार-विमर्श हुआ। गुरु साहिब ने सत्य मार्ग से विचलित हुए धर्म अनुयायियों को धर्म की सही परिभाषा समझाई और समयानुसार आ चुकी कुरीतियों को दूर कर सत्य की प्राप्ति एवं आदर्श जीवन-शैली का सहज मार्ग बताया।

'सिध गोसटि' सिद्धों के साथ हुए संवाद की ७३ पदों में प्रश्नोत्तर शैली में विरचित बड़े आकार की बाणी है। इसमें सिद्धों ने अपने मत की व्याख्या एवं महानता दर्शाते हुए श्री गुरु नानक देव जी को परामर्श दिया था कि वे भी गृहस्थ धर्म त्याग कर योग मत के 'आई पंथ' को धारण कर योग मत के अनुसार आध्यात्मिक रहस्यों की खोज में लग जाएं।

यहां यह भी स्पष्ट करना उचित होगा कि सिद्धों के १२ पंथों में 'आई पंथ' सर्वोत्तम माना जाता है। गुरु साहिब को तो समूची मानवता में पारब्रह्म परमेश्वर का ही नूर दिखाई देता था। उनका सबके साथ एक समान प्यार एवं व्यवहार करना ही सर्वोत्तम पंथ अथवा जाति है।

रामकली महला १ सिध गोसटि
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

Final

सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥
तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥
मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥
नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥१॥
किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥
साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥ (पन्ना ९३८)

किसी भी कार्य को आरंभ करने से पूर्व परमेश्वर के चरणों में अनुनय-विनय की जाती है कार्य की सफलता एवं सम्पूर्णता हेतु। उसी में उसका उद्देश्य भी छिपा रहता है। इस संदर्भ से 'सिध गोसटि' बाणी के प्रारंभ में पहली पउड़ी मंगलाचरण-स्वरूप है, जो बाणी का उद्देश्य भी प्रकट करती है। मंगलाचरण है-- 'संत-सभा की स्तुति' तथा मनोरथ है-- 'सत्य की प्राप्ति'।

श्री गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हमारी नमस्कार है अर्थात् हम नत्मस्तक हैं उन संतों की सभा को जो आसन लगाकर सभा में बैठे हैं अडोल अवस्था में और ईश्वरीय गुणगान हो रहा है अर्थात् सिद्ध-जन आसन लगा कर सभा में मौजूद हैं और सभा में परमेश्वर की जय-जयकार हो रही है। प्रभु के आगे अरदास है जो सच्चा है, अपरंपार है। मैं तो सर्वकला समर्थ परमेश्वर के सम्मुख अपना मस्तक (शीश) काटकर रख दूं और उसी को अपना तन-मन समर्पित (भेंट) कर दूं। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि प्रभु रूपी संत के मिलाप से ही सत्य की प्राप्ति होती है और सहज भाव से ही हरि-यश गायन होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि संतों की संगत प्राप्त हो गई तो ईश्वर की प्राप्ति उनकी संगत के फलस्वरूप सहज ही प्राप्त हो जाती है।

आगे गुरु साहिब ने 'रहाउ' की पंक्तियों का उच्चारण किया है। 'रहाउ' से अभिप्राय ठहराव अर्थात् किसी बाणी का मुख्य एवं मूल भाव 'रहाउ' की पावन पंक्ति में निहित होता है। बाकी सारी बाणी उसी की विशद व्याख्या मानी जाती है। 'सिध गोसटि' बाणी की 'रहाउ' की पंक्ति में गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हुए सिद्धों से प्रश्न करते हैं कि (हे सिद्ध पुरुष!) क्या इधर-उधर भ्रमण करते रहने से शुद्ध और पवित्र हुआ जा सकता है? अर्थात् देश-देशांतरों तथा तीर्थों पर भटकते रहने से कोई लाभ नहीं। ऐसा करने-मात्र से ही हृदय पवित्र नहीं हो जाता। वास्तव में सदा कायम रहने वाले प्रभु के साथ जुड़ने से ही पवित्र हुआ जा सकता है। सच्चे सतिगुरु के सच्चे शबद में जुड़े बिना मुक्ति मुमकिन नहीं है अर्थात् सच्चे शबद को अंगीकार (स्वीकार) करने से ही मुक्ति संभव है।

गुरबाणी में 'सिध' शब्द अन्यत्र भी आया है। जहां 'सिध' शब्द का अर्थ सिद्ध पुरुष है वहीं 'सिध' शब्द परमेश्वर के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। गुरबाणी-प्रमाण है :

सिध साधिक जोगी अरु जंगम
एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥
परसत पैर सिझत ते सुआमी
अखरु जिन कउ आइआ ॥

उपरोक्त पंक्तियों में पहले 'सिध' का अर्थ है-- पहुंचे हुए योगी। दूसरे 'सिध' शब्द का अर्थ है-- अकाल पुरख परमेश्वर। इससे स्पष्ट हो जाता है कि 'सिध गोसटि' के दो अर्थ हैं :

१. सिद्धों से वार्तालाप (संवाद)

२. पारब्रह्म परमेश्वर से मिलाप

इस प्रकार सिद्धों से हुई चर्चा, विचार-गोष्ठि का विषय है- इस मातलोक में अपना दायित्व निभाते हुए परमेश्वर से मिलाप करना।

Final

अंम्रित बाणी ततु वखाणी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

१६०४ ई में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित और बाद में सन् १७०६ ई में दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा पुनर्संपादित श्री गुरु ग्रंथ साहिब में छः गुरु साहिबान, १५ भक्तों, ११ भट्टों एवं ४ गुरु-घर के निकटवर्ती सिक्खों की बाणी दर्ज है।

१४३० पन्नों पर आधारित शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसे ज्ञान-सरोवर है, जिसमें डुबकी लगाकर मनुष्य की अतीत, वर्तमान, भविष्य की सारी समस्याओं के हल खोजे जा सकते हैं। जीवन की कोई भी स्थिति हो, मानव-मन की कोई भी दशा हो, जिंदगी का कोई भी पहलू हो, सबके बारे में गंभीर-गहन दिशा-निर्देश गुरबाणी में मिल जाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब मानव-जीवन को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पक्ष से संबंधित स्पष्ट, पूर्ण, सृजनात्मक और व्यवहारिक दृष्टि प्रदान करते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ब्रह्म, आत्मा, माया, सृष्टि, विभिन्न साधना-पद्धतियों आदि से सम्बद्ध, धार्मिक-दार्शनिक सिद्धांत एवं उनका निचोड़ मिलता है। यहां मानवीय समता, एकता एवं विश्व-बंधुत्व जैसी सामाजिक सरोकारों से संबंधित अवधारणाएं भी मिलती हैं। यही नहीं, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आध्यात्मिक-दार्शनिक पक्ष के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक पक्ष की भी ऐसी विशिष्ट और विलक्षण स्थापनाएं मिलती हैं जो अपने आप में अद्वितीय हैं। ये स्थापनाएं न सिर्फ भक्ति-साहित्य संबंधी चिंतन-मनन को नये आयाम प्रदान करती हैं बल्कि सहज, स्वाभाविक, संपूर्ण एवं खुशहाल जीवन जीने की युक्ति भी सुझाती हैं।

उदाहरण के तौर पर यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ऐसी ही कुछ अद्वितीय एवं विलक्षण स्थापनाओं का संक्षेप में परिचय प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है :-

१. भौतिक संसार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण : लगभग सभी दार्शनिक चिंतनों एवं विचारधाराओं में संसार अथवा सृष्टि को नश्वर, मिथ्या और क्षणभंगुर माना गया है, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संसार को नश्वर, कूड़ (मिथ्या) एवं क्षणभंगुर मानने के बावजूद भी *"सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥"* कहकर सृष्टि अथवा संसार को सत्य माना गया है।

श्री गुरु नानक देव जी संसार को सत्य-रूप ईश्वर का घर मानते हैं और ईश्वर को इसमें निवास करने वाला बताते हैं :

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
(पन्ना ४६३)

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥
सदा समाले को नाही खाली ॥ (पन्ना ११८)

गुरु साहिबान ने संसार को मनुष्य की

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : १९४१७२-७६२७१*

Final

कर्मभूमि माना है। आप किसी भी स्थिति में इसे त्याज्य नहीं मानते।

२. आर्थिक उन्नति स्वीकार्य : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा मनुष्य द्वारा संसार में रहते हुए अपनी भौतिक जरूरतें पूरी करने के लिए अर्थ-उपार्जन को उचित एवं श्रेष्ठ मानती है। यहां किरत यानी कार्य करके जीविका कमाने को सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी अर्थ-उपभोग को अकाल पुरख द्वारा प्रदत्त 'रिज़क' कहकर पवित्र मानते हैं :

खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥
(पन्ना ४७२)

श्री गुरु अरजन देव जी स्पष्ट फरमाते हैं कि इसी प्रकार खाते-पीते, खेलते-पहनते हुए भी मुक्ति या मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

मनुष्य की आर्थिक उन्नति को सामाजिक उन्नति का आधार माना गया है। स्वरोजगार में रत व्यक्ति सदाचारी होता है जो समाज की नैतिक उन्नति में भी भूमिका निभाता है, जबकि कर्महीन व्यक्ति नकारात्मक भावों से ग्रस्त हो जाता है।

३ निजी संपत्ति अर्जित करने का हक : गुरमति विचारधारा मनुष्य को निजी संपत्ति अर्थात् अपनी भौतिक आवश्यकताओं के अनुसार अर्थ-अर्जन करने के लिए प्रेरित करती है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि मनुष्य को परिश्रम करते हुए जीवन जीना चाहिए और अपनी कमाई से ही सुख का भोग करना चाहिए :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
(पन्ना ५२२)

४. स्तरीय जीवन जीने का अधिकार : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उचित, स्तरीय और खुशहाल जीवन गुजारने को मनुष्य का बुनियादी हक माना गया है। श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य का 'साहिब' ही नंगा-भूखा होगा, वह खुद कैसे पेट भर खा सकता है?

साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै
तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥ (पन्ना ३०६)

खुशहाल जिंदगी जीने के लिए अकाल पुरख से सब कुछ मांगा गया है। भक्त धंना जी की मांगें देखिए, जिन्हें दाल, आटा, घी, जूते, अनाज, दूध के लिए गाय-भैंस, सवारी के लिए घोड़ी और सबसे ऊपर एक सुंदर पत्नी भी चाहिए :

दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥ (पन्ना ६९५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर का भी एक ऐसा पद दर्ज है जिसमें भक्त कबीर जी प्रभु से खुशहाल जीवन जीने के लिए जरूरी सारी वस्तुएं मांग रहे हैं और कहते हैं कि मुझसे भूखे रहकर आपकी भक्ति नहीं होती। यह अपनी माला ले। ये चीजें माँग मैं कोई लोभ नहीं कर रहा :

भूखे भगति न कीजै ॥
यह माला अपनी लीजै ॥ . . .
दुइ सेर मांगउ चूना ॥

Final

पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥
खाट मांगउ चउपाई ॥
सिरहाना अवर तुलाई ॥ . . .
मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥
(पन्ना ६५६)

५. *गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता :* भारतीय दर्शन परंपरा में गृहस्थ को हमेशा से दोयम दर्ज़े का माना गया है, परंतु गुरमति में गृहस्थ जीवन को सर्वोत्तम धर्म कहा गया है। आर्थिक उन्नति एवं स्तरीय जीवन जीने जैसे लक्ष्य गृहस्थ जीवन में रहकर ही प्राप्त किये जा सकते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा में सन्यास को निषिद्ध एवं गृहस्थ को श्रेष्ठ कहा गया है। श्री गुरु नानक देव जी स्पष्ट कहते हैं कि योगी, पंडित, पांधे, ज्योतिषी आदि रोज़ ही इधर-उधर भटकते रहते हैं, अकाल पुरख के तत्व सार को नहीं पहचानते। इन सब से उत्तम गृहस्थी है जो अपनी सांसारिक जिम्मेदारियां पूरी करते हुए नाम, दान, भक्ति में दृढ़ रहता है :

जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥
गुर का सबदु न चीन्ही ततु सारु निरंतर ॥३॥
पंडित पाधे जोइसी नित पढ़हि पुराणा ॥
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥४॥
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥५॥
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६॥
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥७॥
गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥
नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥
(पन्ना ४१९)

६. *मानवीय अधिकारों की बात :* मानवीय अधिकार आधुनिक काल की अति महत्वपूर्ण अवधारणा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आश्चर्यजनक रूप से समस्त मानवीय अधिकारों को मनुष्य के लिए अनिवार्य मानने की व्यापक चर्चा की गई है। श्री गुरु नानक देव जी मानवीय अधिकारों के हनन को सबसे बड़ा पाप मानते हैं :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी प्रकार के मानवीय अधिकारों की रक्षा की बात और मनुष्य के लिए आदर्शतम जीवन जीने के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनाने की बात श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान-स्थान पर की गई है।

सामाजिक अधिकार :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

आर्थिक अधिकार :

गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥ (पन्ना १९९)

धार्मिक अधिकार :

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ (पन्ना ८८५)

राजनीतिक अधिकार :

राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

Final

७. नारी की श्रेष्ठता : गुरमति स्त्री-पुरुष में कोई अंतर नहीं करती। यहां स्त्री और पुरुष के अधिकार समान माने गये हैं। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि जीवन के समस्त कार्य-व्यवहार का आधार है नारी, अत: नारी बुरी नहीं हो सकती :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

(पन्ना ४७३)

स्त्री के बिना किसी अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। केवल अकाल पुरख ही स्त्री के दायरे से बाहर है :

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

(पन्ना ४७३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्त्री को स्वाभाविक सम्मान प्रदान करने की बात की गई है। यह नारी के उन दोनों रूपों से अलग है जहां उसे या तो देवी के पद पर बैठा दिया जाता है या फिर उसे नरक का द्वार बता दिया जाता है। पूर्ववर्ती दर्शन-चिंतनों में नारी को सहज मनुष्य माना ही नहीं गया था।

८. नदरि (कृपा) का सिद्धांत : गुरमति में मोक्ष की अवधारणा भी विलक्षण है। श्री गुरु नानक देव जी का कहना है-- *"जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥"* अर्थात् किसी भी प्रकार के विशेष यत्न करने से मोक्ष नहीं पाया जा सकता। आवागमन और मोक्ष मनुष्य के कर्मों का निष्कर्ष हैं। मनुष्य के कर्मों के फलस्वरूप परमात्मा आवागमन और मोक्ष का फल प्रदान करता है :

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥

(पन्ना १)

संसार में प्राणी जो-जो कार्य कर रहा है वह अकाल पुरख का हुक्म ही है :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥

(पन्ना १)

जब अकाल पुरख की रज़ा (इच्छा) होगी तब वह कृपा कर प्राणी को मुक्ति दे देगा :

जिस नो क्रिपा करहि तिनि नामु रतनु पाइआ ॥

(पन्ना ११)

९. व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर सामूहिक मुक्ति : दार्शनिक अवधारणाओं में मुक्ति का अर्थ व्यक्तिगत मुक्ति ही है, परंतु गुरमति व्यक्तिगत मुक्ति के साथ-साथ सामूहिक मुक्ति की बात भी करती है। 'संगत', 'सरबत का भला' जैसी अवधारणाएं इसी उद्देश्य से प्रेरित हैं। हर मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह संपूर्ण मनुष्य बनकर समाज में विचरण करे और अन्य मनुष्यों की मुक्ति में सहयोग करे :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥

(पन्ना ८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुछ नयी सामाजिक एवं दार्शनिक अवधारणएं प्राप्त होती हैं। इन नई चिंतन धाराओं का भक्ति-साहित्य-विश्लेषण में समावेश निश्चित् रूप से भक्ति-साहित्य के अनेक नवीन आयामों को उद्घाटित करेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा मात्र दार्शनिक चिंतन या आध्यात्मिक विचार ही नहीं है, बल्कि यह सहज-स्वाभाविक, संपूर्ण, खुशहाल जीवन जीने की युक्ति भी है।

Final

भक्त रामानंद जी

-श्री रमेश बग्गा चोहला*

मध्य काल के दौरान भारत में चली भक्ति लहर का रूहानियत की अमीरी के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस लहर से जुड़े भक्त साहिबान की ओर से जिस बाणी का उच्चारण किया गया, उसमें धर्म के कर्मकांडी रूप को रद्द कर सच्चे आचार तथा शुद्ध व्यवहार को धर्म का बुनियादी तत्व माना गया है। यह मान्यता केवल बातों में ही नहीं दी गई बल्कि भक्त-जनों का अपना समूचा जीवन भी इस मान्यता के अनुसार ही रहा है। आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रभु-एकता का ज्ञान देने वाले ये भक्त साहिबान अपने समय के समाज को सुधारने व निखारने में भी अपना अमूल्य योगदान देते रहे हैं। इस योगदान के बदले इन महापुरुषों को कई बार कट्टरपंथिओं की नफरत तथा उनके गुस्से का शिकार भी होना पड़ता था।

अपनी विशेष व विलक्षण विचारधारा के साथ जहां इन्होंने मानवता-विरोधी विचारों को खारिज किया, वहीं नवीन सोच वाले समाज की सृजना हेतु अनथक प्रयत्न भी किये। इन प्रयत्नों के कारण ही भक्त साहिबान की पहचान स्थापित होती रही है, जो उन्हें क्षेत्रीय व भाषायी हदों से पार ले जाकर लोगों के सम्मान का पात्र बनाती रही है। इन्हीं सम्माननीय लोगों में शामिल है उत्तरी भारत की भक्ति लहर के संस्थापक भक्त रामानंद जी का नाम।

भक्त रामानंद जी, जिन्हें स्वामी रामानंद जी नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 15 अगस्त, 1366 ई. (संवत् 1423 को तथाकथित गौड़ ब्राह्मण श्री भूरिकर्मा तथा माता सुशीला देवी के गृह में प्रयागराज (इलाहाबाद), उत्तर प्रदेश में हुआ। कुछ लेखकों के अनुसार भक्त जी के पिता का नाम श्री सदन शर्मा तथा जन्म-स्थान काशी है। बचपन में इन्हें रामादत्त नाम से भी बुलाया जाता था। भक्त रामानंद जी आचार्य रामानुज के द्वारा चलाई गई श्री संप्रदाय के महान प्रचारक स्वामी राघवनंद के शिष्य थे, जो इस संप्रदाय के 13वें मुखी थे।

भक्त रामानंद जी का जीवन-काल एक सदी माना जाता है, जो इन्होंने प्रभु-भक्ति में लीन रहकर ही गुजारा। भक्त जी लंबे समय तक श्री संप्रदाय के साथ जुड़ कर आध्यात्मिक गतिविधियों को पूर्ण करते रहे, परंतु बाद में इन्होंने रामावत/रामादत्त संप्रदाय की स्थापना कर ली। इस संप्रदाय के सिद्धांत तो पहले (श्री संप्रदाय) वाले ही रहे, परंतु साधना-पद्धति में कुछ उदारता जरूर बन गई। इस लहर से भक्ति लहर में एक विलक्षण रंग व ढंग दिखाई देने लगा। इस रंग एवं ढंग के कारण उस समय की कुछ तथाकथित नीच जातियों के लोग भी इस क्रांतिकारी लहर के साथ जुड़ने लगे तथा परमात्मा की भक्ति का अधिकार हासिल करने लगे। भक्त रामानंद जी के अनथक प्रयत्नों

*1348/17/1, गली नं. 8, ऋषि नगर एक्सटेंशल, हैबोवाल खुर्द, लुधियाना। फोन : 94631-32719

Final

से प्रभु-नाम-सिमरन की धारा झुग्गियो-झोपड़ियों के निवासियों तक पहुंच गई तथा उनका आत्मिक जीवन भी आनंदित होने लगा। उस समय के वर्ग-विभाजन वाले समाज में भक्त जी द्वारा किया गया बराबरी का व्यवहार किसी क्रांतिकारी कदम से कम नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उस समय पूजा-पाठ का अधिकार कुछ आरक्षित श्रेणी के लोगों के हिस्से ही आता था। भक्त जी की इस फराखदिली वाली सोच-समझ से प्रभावित होकर वैरागी संप्रदाय वाले भी उन्हें अपना आचार्य मानने लगे। कुछ समय के बाद भक्त रामानंद जी ने वैष्णव मत को त्याग दिया तथा एक अकाल पुरख के उपासक बन गए। भक्त जी की इस प्रभु-उपासना के कारण ही पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इनका बसंत राग में उच्चारण किया हुआ एक शबद ''कत जाइऐ रे घर लागो रंगु॥ मेरा चितु न चलै मनु भईऊ पंगु॥'' श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया जो कि पन्ना 1195 पर दर्ज है। इस शबद में अपनी मानसिक अवस्था को बयान करते हुए भक्त जी बताते हैं कि मेरा मन पिंगला हो गया है। अब यह दर-दर नहीं भटकता, बल्कि अपने प्यारे को पूर्ण रूप से समर्पित हो गया है।

भक्त रामानंद जी के कई प्रसिद्ध शिष्य हुए हैं, जिन्होंने अपने-अपने समय में लोगों को सत्य के साथ जोड़ा तथा झूठ से विमुख किया। भक्त जी के शिष्यों में भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सैण जी तथा भक्त पीपा जी का नाम वर्णनयोग्य है। भक्ति लहर के प्रचार तथा प्रसार में जहां इन महापुरुषों ने काबिल-ए-तारीफ योगदान डाला वहीं ईश्वरीय समीपता एवं प्यार हासिल करने के लिए भक्ति के मार्ग को उत्तम मार्ग दर्शाया। अपने जीवन का लंबा समय गंगा के किनारे (काशी में) व्यतीत कर भक्त रामानंद जी 1467 ई. को परलोक गमन कर गए।

भक्त रामानंद जी की विचारधारा के अनुसार पूर्ण गुरु की शरण ही जन्म-जन्मांतर के बंधनों को काटने के समर्थ बनाती है। आज भी भक्त रामानंद जी के उपदेशों की उतनी ही सार्थकता है जितनी उनके अपने काल में थी। आवश्यकता केवल उनको आत्मसात् करने की है

Final

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का निर्मल संदेश : सरबत्त का भला

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

समय-समय पर हर धर्म में अलग-अलग धार्मिक नेता जनता को इलाही-परोपकारी संदेश देते रहे हैं। हर धर्म के धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी जगह आदरणीय हैं, परंतु जो सर्वश्रेष्ठता, सर्वसम्मान, सर्वसांझीवालता, प्रमाणिकता और विश्व-भाईचारे के लिए सांझा उपदेश धुर की बाणी, शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है, वह और कहीं नहीं मिलता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समुच्चय बाणी इलाही हुक्म है, जिसे निरंकार परमेश्वर ने कृपा करके अपने प्यारे जनों के मुंह से बुलवाया है। यह व्यक्तिगत किरत नहीं, यह धुर दरगाही किरत है। इसे गोबिंद की बाणी, खसम की बाणी, धुर की बाणी आदि विशेषणों से अलंकृत किया गया है। यह ऐसी ईश्वरीय शक्ति है जो मानव को हरि में अभेद कर सकने की अथाह सामर्थ्य रखती है। विश्व-भाईचारे के सर्वपक्षीय कल्याण के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सरबत्त के भले का पवित्र संदेश है। इसमें किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं बल्कि बिना किसी भेदभाव के सब प्राणियों के साथ एक जैसा व्यवहार करने की प्रेरणा है। जैनियों, बोधियों, ईसाईयों, हिंदुओं, सिक्खों, पारसियों, यहूदियों आदि सबको परस्पर सहयोग, प्रेम-भावना के साथ जीवन जीने और अच्छे इंसान बनने का बराबर संदेश प्रदान किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में किसी के साथ भी रियायत नहीं की गई, बल्कि नाम-सिमरन, प्रेमा-भक्ति, किरत और शुभ कर्म करने के लिए चेतना प्रदान की गई है। हम सभी *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* हैं, तो फिर मानव भाईचारे में आपसी भेदभाव क्यों?

--सभु को मीतु हम आपन कीना
हम सभना के साजन ॥ *(पन्ना ६७१)*
--जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ
सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ *(पन्ना ५६६)*
--सभ की रेनु होइ रहै मनूआ
सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ *(पन्ना ३७९)*

जहां सरबत्त का भला हो, वहां किसी का बुरा नहीं मांगा जाता।

दुनिया में हर कोई अपना ही भला चाहता है। किसी ने पड़ोसी या समाज का भला कम ही मांगा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उपदेश है कि हे मानव! यदि तू सदा सुख चाहता है, तो किसी का बुरा मन में न सोच :

पर का बुरा ना राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ *(पन्ना ३८६)*

सरबत्त का भला मांगने से अपना भला भी बीच में ही आ जाता है। गुरबाणी में कहीं भी व्यक्तिगत भले की बात नहीं की गई। अकाल पुरख से सब जीव-जंतुओं पर कृपा करने, सारे संसार को अन्न, पानी, वस्त्र देने, सब प्रकार के दुख, क्लेश, वैर-विरोध मिटाने

**गांव : कैले कलां, डाक : घुम्मण कलां, ज़िला : गुरदासपुर-१४३५१८; फोन : ९८५५८५१०१४*

Final

तथा सारी दुनिया की सुख-शांति के लिए अरदास की गई है :

सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥
अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥
लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥
नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥
(पन्ना १२५१)

सारा संसार दुखों, क्लेशों, विकारों और अहंकार की आग में जल रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में करता पुरख के आगे पुरज़ोर विनती की गई है कि जैसे भी हो, हे प्रभु जी! इस जल रहे संसार पर कृपा करके इसे शीतलता प्रदान करो :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)

सर्वसांझा पिता प्रभु है। एक ही मिट्टी से उसने हाथी, चींटी, वनस्पति, मानव, पशु-पक्षी बनाए हैं। सभी में वो खुद समाया हुआ है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावार जंगम कीट पतंगम
घटि घटि रामु समाना रे ॥ (पन्ना ९८८)

सभी में खुदा का निवास है। सभी एक जैसे हैं। उसके बिना कोई है ही नहीं। फिर भी मनुष्य मनुष्य का दुश्मन क्यों बना बैठा है? वैर-विरोध, ईर्ष्या, झगड़े, मुकद्दमे, मानवीय मन-मुटाव, विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय झगड़े, तोपें, बारूद, एटमी तबाही के पदार्थ सब किसके लिए मानव ने बनाए हैं? मानव ही मानव का शत्रु बना बैठा है। ज़मीनों के झगड़े, जायदाद का असमतोल विभाजन मज़दूरों का शोषण आदि विश्व स्तर पर पसरा हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी विश्व स्तर पर शांति, एकता, प्यार, खुशियां, आनंद, खुशहाली का प्रसार चाहती है :

--फरीदा खालकु खलक महि
खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीऐ जा तिसु बिनु कोई नाहि ॥
(पन्ना १३८१)
--सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है
गोबिंद बिनु नही कोई ॥
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे
ओति पोति प्रभु सोई ॥ (पन्ना ४८५)
--एको पवणु माटी सभ एका
सभ एका जोति सबाईआ ॥ (पन्ना ९६)

परिवार के सभी सदस्य यदि इत्तफाक और प्यार के साथ रहें तो परिवार में खुशहाली रहती है। इसके विपरीत यदि परिवार में परस्पर द्वेष, ईर्ष्या, झगड़ा और क्लेश रहे तो सभी दुखी होते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानव के लिए मन में से क्रोध निकाल देने और किसी का भी दिल न दुखी करने का उपदेश है :

--फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
(पन्ना १३८१)
--दूखु ने देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥
(पन्ना ३२२)

गुरबाणी के अनुसार कोई भी बुरा नहीं। सारी सृष्टि करता पुरख ने एक नूर से बनाई है। सभी उसी के बंदे हैं :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
(पन्ना १३४९)

Final

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ऐसे शरीर को उत्तम कहा गया है जो अंदर-बाहर से निर्मल है। जो मानव गुरु-हुक्म में जीवन बसर करते हैं, वही उत्तम हैं। जो मानव दूसरों का बुरा सोचते हैं या करते हैं और परोपकार से दूर हैं, वे परमेश्वर को अच्छे नहीं लगते। परमेश्वर के लिए तो वही शरीर पवित्र है, जो पाप अर्थात् बुरे कर्म नहीं करता :

सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥
(पन्ना १९८)

जो मानव निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए, ज्यादा धन एकत्रित करने के लिए अपने अहंकार के अधीन दूसरों के साथ कपट करते हैं, अकाल पुरख के दरबार में उनको लेखा देना ही पड़ेगा। उस समय का पश्चाताप फिर किसी काम नहीं आयेगा। पवित्र फरमान है :

मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥ (पन्ना ६५६)

बेगाना हक खाना जहां गुरबाणी में सख़्ती के साथ वर्जित है, वहीं अपने हाथों से किरत (श्रम) करने को उत्साहित किया गया है। मानव जीवन में यदि आध्यात्मिक जीवन की समझ प्राप्त करनी है तो वो केवल खून-पसीने की नेक कमाई में ही निहित है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का दायरा इतना विशाल है कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित भूत, भविष्य और वर्तमान की सब प्रकार की सामग्री इसमें सम्मिलित है। मानव जीवन के लिए इसमें सर्वकालीन, सर्वपक्षीय और सुयोग्य नेतृत्व देने की सामर्थ्य है। सिक्ख जगत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को युगो-युग अटल गुरु के रूप में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है। हर धर्म के लोग श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सत्कार करते हैं, क्योंकि ऐसा सर्वसांझा महान ग्रंथ और कोई है ही नहीं, जो समूचे विश्व को बिना किसी भेदभाव के संदेश प्रदान करता हो। गुरमति विचारधारा के अनुसार न कोई शत्रु है, न कोई बेगाना है, बल्कि सभी एक समान हैं। यदि बेगाना कोई है ही नहीं तो फिर वैर-विरोध भी नहीं होना चाहिए। यदि हम पूरे विश्व में प्यार और सद्भावना चाहते हैं तो हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं के अनुसार हृदय शुद्ध कर जीवन व्यतीत करना चाहिए :

--न को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)
--सभे साझीवाल सदाइनि
तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सरबत्त के भले का संदेश युगो-युग अटल है और वर्तमान एटमी वैज्ञानिक युग में इसकी अहम सार्थकता है। गुरसिक्ख दैनिक जीवन में गुरु से जहां नाम-सिमरन की रहमत मांगता है, वहीं सरबत्त के भले की अरदास भी करता है :

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

Final

ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै

*-डॉ. परमजीत कौर**

समाज में सम्मान, इज्जत प्राप्त करने के लिए मनुष्य स्वयं को प्रभावशाली बनाना चाहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शारीरिक शृंगार प्रमुख साधन माना जाता है। आधुनिक युग में शारीरिक शृंगार का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। ऐसा शृंगार, जो प्राकृतिक रूप-रंग को बदल कर किया जाता है, बाहरी रूप से सुंदर तथा खूबसूरत बेशक बना देता हो, मगर आत्मिक सुंदरता को नष्ट कर देता है। चंचलता को बढ़ाने वाला शृंगार मन में विकार उत्पन्न करता है, मन को भटकाता है, मन को स्थिर नहीं रहने देता।

बाहरी रूप से अच्छे से अच्छा किया गया शृंगार भी थोड़ी देर बाद अपनी चमक गंवा देता है। सुंदर शारीरिक शृंगार करने वाला भी यदि सदाचारी नहीं, विनम्र नहीं, मधुभाषी नहीं, तो उसका बाहरी शृंगार व्यर्थ है। ऐसा प्राणी समाज में अधिक देर तक मान-सम्मान नहीं प्राप्त कर सकता और न ही परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि हे जीव स्त्री! तू ऐसा सुंदर शृंगार कर जो कभी मैला न हो तथा दिन-रात तेरा प्रेम प्रभु के साथ बना रहे :

ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई
अहिनिसि लागै भाउ ॥ *(पन्ना ७८५)*

हरि के नाम का शृंगार ही ऐसा शृंगार है, जो मनुष्य को सदा के लिए सुशोभित करता है तथा प्रभु को अच्छा लगता है :

हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन
हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥
ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै
हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ *(पन्ना ६५०)*

परमात्मा के नाम का शृंगार करने के लिए, हृदय में परमात्मा का प्रेम पैदा करने के लिए गुरमति के अनुसार चलना तथा गुणों को धारण करना आवश्यक है। गुरु-शबद का विचार किए बिना तथा गुरु-उपदेश के अनुसार जीवन बनाए बिना माया-मोह के जाल से मुक्त होकर जीवन को छल-कपट से रहित, पवित्र बनाना संभव नहीं है। गुणों का अभाव काम, क्रोध, लोभ, मोह, निंदा आदि विकारों को पैदा करता है, जिससे मन मैला रहता है तथा भटकता रहता है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि जिस जीव-स्त्री के शरीर पर मोह-माया की कलफ चढ़ी हुई है तथा उसने इसको दुनियावी रसों से रंगा हुआ है, वो जीव-स्त्री प्रभु-पति के साथ नहीं जुड़ सकती; वह प्रभु को अच्छी नहीं लगती :

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे
लीतड़ा लबि रंगाए ॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे
किउ धन सेजै जाए ॥ *(पन्ना ७२१)*

**६२०, गली नं. १, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर, (हरियाणा)-- १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

Final

श्री गुरु अमरदास जी के मत में सतिगुरु के शबद के बिना जीव-स्त्री चाहे अनगिनत शृंगार कर ले, वह (आत्मिक रूप से) शुद्ध नहीं हो सकती :

बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥
(पन्ना ६५१)

मानव-शरीर के लिए गुरु का शबद मानों आभूषण है। इस आभूषण की बरकत से सदैव सुख मिलता है :

देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (पन्ना १०९२)

मन के पीछे चलने वाले मनुष्य प्रभु को प्रसन्न करने वाला शृंगार करना नहीं जानते तथा मानव-जन्म व्यर्थ गंवा देते हैं :

मनमुखि सीगारु न जाणनी
जासनि जनमु सभु हारि ॥
बिनु हरि भगती सीगारु करहि
नित जंमहि होइ खुआरु ॥ (पन्ना ९५०)

जब मनुष्य मनमति का त्याग कर गुरु-शबद का विचार करता है तथा गुरु की मति के अनुसार चलता है तो परमात्मा के गुण-कीर्तन में लग जाता है। गुरु जी बताते हैं कि प्रभु के गुण-कीर्तन को पोशाक बनाओ। यह पोशाक सदा स्वच्छ रहती है, कभी मलिन नहीं होती। सदैव परमात्मा की उपमा करते रहने से मन को विकारों की मैल नहीं लगती, अहंकार समाप्त होने लगता है। परमात्मा ही सब कुछ करने वाला है, इस बात की समझ आ जाती है :

पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु ऊजला
मैला कदे न होइ ॥ (पन्ना १०९२)

मन नाम-सिमरन से आनंदित होने लगता है। जैसे-जैसे मन माया-मोह से हटकर परमात्मा के साथ जुड़ता है, उसके अंदर सत्य, संतोष, दया, धर्म, परोपकार, मधुरता, विनम्रता आदि गुण पनपने शुरू हो जाते हैं। यही गुण आत्मा का शृंगार हैं। श्री गुरु अरजन देव जी परमात्मा से प्रार्थना करने का तरीका बताते हुए कह रहे हैं कि हे प्रभु! कृपा करो कि मैं सत्य-संतोष तथा दया-धर्म को अपने जीवन का शृंगार बनाये रखूं। जैसे सुहागिन स्त्री अपने पति को प्रिय लगती है वैसे ही मैं परमात्मा की कृपा से सफल जीवन वाला बनकर परमात्मा को प्यारा लग सकता हूं :

सत संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥
सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥
(पन्ना ८१२)

गुरु साहिबान विस्तार से समझा रहे हैं कि जिन स्त्रियों के सिर पर प्रभु-पति का हाथ है, उन्होंने उनके गुणों को अपने जीवन का आभूषण बनाया है। वे प्रभु-पति के प्रेम की सुगंध को अपने शरीर पर लगाती हैं। वे अपने हृदय में प्रभु के गुणों के विचार का रत्न संभाल कर रखती है :

सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥
प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥
(पन्ना ४२६)

गुरु पातशाह के अनुसार बेशक प्रभु की प्यारी सुहागिन जीव-स्त्रियों को जाकर पूछ लो कि आपने किन गुणों के द्वारा प्रभु-मिलाप के आनंद को अनुभव किया है, उनसे यही पता चलेगा कि वे स्थिरता, मधुरता, विनम्रता आदि गुणों का शृंगार करती हैं। सुखदाता प्रभु-पति

Final

तभी प्रसन्न होता है जब गुरु का उपदेश सावधानी से सुना जाए तथा गुणों को धारण किया जाए :

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥
(पन्ना १७)

नाम-सिमरन की बरकत से पैदा हुए ये गुण ही जीवन का वास्तविक आभूषण हैं। सत्य, संतोष, दया आदि गुणों को धारण करने से मनुष्य चिंता, क्लेश, तनाव से शीघ्र मुक्त हो जाता है। मानसिक शांति एवं संतुष्टि के कारण उसके अंदर उत्साह तथा उल्लास बना रहता है, जो उसको सुंदर बना देता है। नाम-सिमरन करने वाले मनुष्य के लिए ये गुण जीवन-यात्रा का खर्च अर्थात् उसके जीवन का आधार बन जाते हैं :

सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥
मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥
(पन्ना ४२२)

जो जीव गुरु साहिबान द्वारा निर्दिष्ट कर्म नहीं करता, ऐसे गुणहीन व्यक्ति का शरीर व्यर्थ है :

सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥
(पन्ना ६५१)

जब जीव-स्त्री के अंदर परमात्मा का नाम बस जाता है, वह सदा परमात्मा के प्रेम तथा निर्मल भय में रहती है। इस तरह उसका शृंगार सम्पूर्ण हो जाता है :

--पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥
(पन्ना ६५१)
--जो किछु करे सो भला करि मानीऐ
हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥
जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥
सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै
ऐसा परमलु लाईऐ ॥ *(पन्ना ७२२)*

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जो जीव परमात्मा का गुण-कीर्तन करता है, गुरमति के अनुसार जीवन-यापन करता है, परमात्मा के नाम का सिमरन करता है, उसके अंदर से अज्ञान का अंधकार दूर हो जाता है। नाम-सिमरन करने से मन की मैल उतर जाती है। उसकी सारी ज्ञानेंद्रियां सुंदर तथा आत्मिक जीवन वाली बन जाती हैं। उसकी आत्मा को सदा कायम रहने वाली सुंदरता प्राप्त हो जाती है। वह परमात्मा को प्यारा लगता है। गुरु-वाक्य हैं :

--गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु ॥
(पन्ना ७५५)
--गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु
घर मंदर सोहाइआ ॥
तनु मनु अरपि सीगार बणाए
हरि प्रभ साचे भाइआ ॥ *(पन्ना ७७५)*

जिस जीव को परमात्मा ने स्वयं संवार दिया हो वह अकाल पुरख के प्रेम की बरकत से सुंदर जीवन वाला बन जाता है, सदा शोभा अर्जित करता है तथा आत्मा का शुभ गुणों से शृंगार करता है :

सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥२॥
सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥
पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥
(पन्ना ४२६)

Final

सिक्ख इतिहास का गौरवमयी कांड : मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग

-पांधी ननकाणवी

अंग्रेज सरकार द्वारा महंत नारायण दास की आड़ तले सिक्ख कौम को सबक सिखाने के लिए गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी, ननकाणा साहिब में २० फरवरी, १९२१ ई को जिस ढंग से दो सौ के लगभग शूरवीर सिक्खों के खून से होली खेली गई उससे सरकार की प्यास बुझने की बजाय और भी भड़क उठी थी। जल्द ही श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की चाबियां प्राप्त करने के मुद्दे पर सिक्ख पंथ तथा अंग्रेज सरकार के मध्य सीधा मुकाबला हो गया, जिसमें सरकार को लज्जित होना पड़ा। अंग्रेज सरकार अकाली लहर अथवा गुरुद्वारा सुधार लहर को कुचलने के लिए पवित्र गुरुधामों तथा उससे संबंधित जायदादों पर काबिज़ अय्याश महंतों की पीठ थपथपाने लग गई, जिसके फलस्वरूप गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे की आरंभता हुई।

श्री अमृतसर से लगभग २० कि. मी. की दूरी पर गांव घुक्केवाली में श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की याद को समर्पित दो पावन धाम स्थित हैं, जिनके नाम पर काफी ज़मीन लगी हुई है। यह पावन स्थान गुरुद्वारा गुरु का बाग नाम से विख़्यात है। १९२०-२१ ई में इस ज़मीन पर कीकर (बबूल), झाड़ियां आदि उगी हुई थीं जो सामूहिक रूप से महंत सुंदर दास के कब्जे में थीं। यह महंत सारे इलाके में अपनी अय्याश रुचियों के कारण बहुत बदनाम हो चुका था। इलाके भर की सिक्ख संगत की मांग पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इलाके के प्रसिद्ध पंथ सेवक स. दान सिंघ विछोआ को इन दोनों गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध में सुधार लाने के लिए नियुक्त किया। स. दान सिंघ ने महंत को प्रेरित किया कि वो केवल एक स्त्री के साथ गुरमति मर्यादानुसार अनंद कारज करवाकर घर-गृहस्थी बसा ले और अमृत छककर सिंघ सज जाये; दोनों पावन गुरुधामों की सेवा पवित्र कार्य समझकर करे। महंत ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और ईशरी नामक स्त्री के साथ अनंद कारज करवा लिया तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होकर दोनों पति-पत्नी ने अमृत भी छक लिया। दोनों के नाम जोगिंदर सिंघ व गिआन कौर रखे गए।

साका गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में अंग्रेज सरकार की सिक्खों के प्रति विरोध भरी नीति को सूंघकर महंत ने पुन: अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लिया। इसे मुख्य रखकर पंथक जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स. दान सिंघ विछोआ को फिर हुक्म किया कि वो दोनों गुरुधामों एवं उनसे सम्बंधित जायदाद को अपने नियंत्रण में ले ले और इलाके की संगत के सहयोग से गुरुधामों की सेवा-संभाल करे। यह देखकर महंत का हृदय घबराया और उसने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ संधि कर ली। शर्तों के अनुसार महंत के गुज़ारे के लिए १२० रुपए मासिक और श्री अमृतसर में रिहायश के लिए एक मकान भी खरीदकर दिया गया। इस प्रकार दोनों पावन गुरुधाम और सम्बंधित गुरु का बाग वाली ज़मीन स्वाभाविक ही पंथक कब्जे में आ गई। जल्द ही महंत ने अंग्रेज ज़िला अधिकारियों

Final

की उकसाहट से गुरुधामों को अपने अधिकार में लेने के लिए हाथ-पैर मारने आरंभ कर दिए, जिन पर अब तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का अधिकार था। इस पर सिक्खों एवं ज़िला अधिकारियों के मध्य मुकाबला आरंभ हो गया। पांच सिक्ख 'गुरु का बाग' में से लंगर के लिए जब लकड़ियां काटने के लिए गए तो ये पांचों सिक्ख पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। मि. डनट, डिप्टी कमिश्नर श्री अमृतसर ने इन पांचों सिक्खों को छः-छः महीने कैद तथा जुर्माने की सज़ा सुनाई। इस गिरफ्तारी को हर तरह से जायज़ ठहराने के लिए मि. बी. टी. (असिस्टेंट सुप्रिंटेंडेंट ऑफ पुलिस) खुद महंत के पास गया और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विरुद्ध रिपोर्ट प्राप्त की।

यह थी एक चुनौती, जो अंग्रेज हाकिमों ने महंत की आड़ में सिक्ख कौम को दी थी। इसके उत्तर में पंथक नेताओं ने पांच सिक्खों का एक अन्य जत्था स. सरमुख सिंघ 'चमक' के नेतृत्व में भेजकर अंग्रेज हाकिमों को यह बात स्पष्ट कर दी कि 'गुरु का बाग' वाली ज़मीन पंथ के अधिकार में है तथा लंगर के लिए लकड़ियां काटना उनका अधिकार है। इस जत्थे को भी पुलिस ने पहले गिरफ्तार किया, फिर पूछताछ करके कि जत्थे भिजवाने में किसका हाथ है आदि बातों का पता लगाकर छोड़ दिया। इस प्रकार 'गुरु का बाग' की ज़मीन पर अपना हक जताने के लिए सिक्ख गिरफ्तारियां देने लग गए। सिक्ख कौम के अधिकार को मीयां फज़ल हुसैन, सदस्य पंजाब कौंसिल ने भी स्वीकार किया था। मीयां साहब के अनुसार, "शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ३१ जनवरी, १९२१ ई को गुरुद्वारा गुरु का बाग का कब्जा महंत सुंदर दास से ले लिया था, मगर सरकार (अंग्रेजी) ने अकाली लहर को खत्म करने के लिए 'गुरुद्वारा गुरु का बाग' में बाधा उत्पन्न की थी।"

अंग्रेज सरकार की इस धक्केशाही के विरुद्ध समूह सिक्ख पंथ में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। २०/२२ अगस्त, १९२१ ई को गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल श्री अमृतसर में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अगुओं ने अंग्रेज हाकिमों की इस धांधली के विरुद्ध समूह सिक्ख जगत से शांतिपूर्ण गिरफ्तारियां देने की अपील की और इस प्रकार बाकायदा मोर्चे का आरंभ हो गया। पुलिस भी अपने हाकिमों के इशारे पर सिक्खों पर दमन-चक्र चलाती रही।

२६ अगस्त, १९२२ ई को गुरुद्वारा गुरु का बाग में भी एक दीवान सजाया गया। दीवान के पश्चात् ३६ सिक्खों का एक जत्था 'गुरु का बाग' में से लकड़ियां काटने के अधिकार को उचित साबित करने के लिए आगे बढ़ा ही था कि पुलिस ने सिक्खों को अपनी लाठियों से बहुत ज्यादा पीटा। इस घटना ने जलती पर तेल डालने का काम किया। समूह पंथ में विद्रोह की भावना जाग उठी।

२६ अगस्त, १९२२ ई को ही सारी स्थिति पर विचार करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर एक एकत्रता बुलाई। इस एकत्रता में भारी मात्रा में संगत हाज़री भर रही थी। ठीक उसी समय डिप्टी कमिश्नर, श्री अमृतसर ने एक पर्ची अपने चपरासी के हाथ भिजवाई, जिसमें लिखा हुआ था कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रमुख अगुओं के गिरफ्तारी के वारंट जारी हो चुके हैं, इसलिए वे गिरफ्तार होने के लिए खुद श्री दरबार साहिब परिसर से बाहर आ जाएं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर अरदास कर, हुकमनामा तथा कड़ाह प्रसाद प्राप्त कर पंथक नेताओं ने जैकारों की गूंज में खुद को

Final

गिरफ्तारी के लिए पेश किया। जत्थे में प्रमुख अगुआ इस प्रकार थे-- सरदार बहादर महिताब सिंघ (प्रधान), भगत जसवंत सिंघ (महासचिव), स. नराइण सिंघ बैरिस्टर (सचिव), प्रो. साहिब सिंघ (उप सचिव), स. सुरमुख सिंघ (झबाल), मास्टर तारा सिंघ, स. रवेल सिंघ, बाबा किहर सिंघ पट्टी आदि। इन नेताओं को प्रण दिलाया गया कि वे पूर्ण रूप से शांतचित्त रहकर खुद को गिरफ्तारी के लिए पेश करेंगे। अत: ऐसे ही किया गया।

इस प्रकार सिक्खों के जत्थे श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होते। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में सिक्खों को यह आदेश कर देते कि हाकिमों द्वारा दिखाई हर किस्म की भड़काहट, उकसाहट तथा मारपीट के बावजूद वे पूर्णत: शांत रहेंगे और गुरुद्वारा गुरु का बाग पर पंथक अधिकार मनवाकर ही दम लेंगे, चाहे कि इस कार्य को सम्पूर्ण करने के लिए वे शहीदियां ही क्यों न प्राप्त कर जाएं।

देश भर में आज़ादी के लिए संघर्षशील जमातों, विशेषत: 'नेशनल कांग्रेस' तथा 'खिलाफत तहरीक' के नेताओं ने शांतमयी जत्थों पर बी. टी. के हुक्म से पुलिस द्वारा पशुओं की भांति की गई मारपीट को घृणा की दृष्टि से देखा। देश भर में हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों आदि ने सिक्खों के साथ सहानुभूति प्रकट की और क्रूरता भरे ढंग से मार खाने के बावजूद भी शांतमयी रहने की प्रशंसा की तथा अंग्रेज हाकिमों की दमन-नीति की जी भरकर निंदा की। समूची कौमी प्रेस ने सिक्खों की सहनशीलता की तारीफ़ की। देश भर के पत्रकारों तथा नेताओं ने सिक्खों के जत्थों को बुरी तरह मार खाते हुए अपनी आंखों से देखा और आंसू बहाए। ये आंसू प्रकट करते हैं कि 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' जपते सिक्खों पर हुआ जुल्मो-सितम अपनी सारी सीमाएं लांघ चुका था। मि. बी. टी. (ए. एस. पी.), मि. लाब, मि. जैकफरसन (एस. पी.) आदि के हुक्म से सिक्खों को लाठियों से इस हद तक मारा जाता कि वे मार खाते-खाते लहू-लुहान हो जाते और अंत में बेहोश होकर गिर पड़ते। बी. टी. के हुक्म से सिक्खों को पवित्र केशों से पकड़कर घसीटा जाता और फिर बेहोश हो चुके गुरु के सिक्खों को लातें मारी जातीं। उनको ऐसी हालत में गंदे पानी वाले तालाबों में फेंक दिया जाता। धन्य हैं गुरु के वे सिक्ख जिन्होंने बी. टी. की मार बर्दाश्त कर अपने प्रण को हर हाल में निभाकर दिखाया। इस अवसर पर पंडित मदन मोहन मालवीय, हकीम अजमल ख़ान, लाला दुनी चंद (प्रधान, पंजाब कांग्रेस), मलक लाल खां, मीयां मुहम्मद शरीफ, डॉ. याकूब बेग (खिलाफत कमेटी), स्वामी श्रद्धानंद, कुमारी लज्यावती, पादरी एंड्रयूज, श्रीमती सरोजनी नायडू, सर जुगिंदर सिंघ, भाई जोध सिंघ, प्रो. रुचि राम साहनी, स. अमर सिंघ (लायल गज़ट) आदि प्रमुख अगुआ, सुधारक एवं पत्रकार भी पधारे। उन्होंने सिक्ख जत्थों को शांतिपूर्ण ढंग से 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' जपते हुए, पुलिस से मार खाते हुए अपनी आंखों से देखा और आंसू भर-भर रोए। पंडित मालवीय ने मि. लाब (ए. एस. पी.) के आगे सिक्ख सत्याग्रही जत्थों पर बेवजह सितम ढाने का ज़ोरदार शब्दों में विरोध किया और जलियां वाला बाग, श्री अमृतसर में एक जलसा कर सिक्ख कौम के हक में अपनी आवाज़ बुलंद की। ३ सितंबर, १९२२ ई. को खैरदान (श्री अमृतसर) की मसजिद में मुसलिम भाइयों ने भी सिक्खों की उनके अपने मकसद में कामयाबी की दुआ मांगी। यह मोर्चा १४ सितंबर, १९२२ ई. से १७ नवंबर, १९२२ ई. तक चला। लायलपुर के ऊंचे-लंबे, सुंदर नौजवान जत्थेदार प्रिथीपाल

Final

सिंघ ने पुलिस की जालिमाना मार के कारण २ अप्रैल, १९२४ ई को शहीदी प्राप्त की। दो अन्य हलवाह पिता-पुत्र सिक्ख-- स. भगत सिंघ व स. तारा सिंघ निर्दोष ही पुलिस के जुल्म का शिकार होकर शहीदियां प्राप्त कर गए।

पंथक नेताओं के मुकद्दमे में डीफेंस के रूप में पंडित मदन मोहन मालवीय खुद पेश हुए। मोर्चे के रौंगटे खड़े करने वाले हालात जब उन्होंने मजिस्ट्रेट के रूबरू दर्शाए तो कहते हैं कि श्रोताओं के साथ-साथ मजिस्ट्रेट की आंखें भी भर आई थीं। १४ मार्च, १९२३ ई को सिक्ख पंथक नेता जेल से बाहर आ गए। सरकार ने सर गंगा राम को मध्यस्थ बनाकर गुरुद्वारा गुरु के बाग की ज़मीन महंत से उसे ठेके पर दिलाकर पुलिस हटा ली। इस प्रकार सिक्ख पंथ उस ज़मीन पर स्थाई रूप से काबिज हो गया और सिक्ख सत्याग्रही रिहा होकर श्री अमृतसर पहुंच गए तथा मोर्चा समाप्त हो गया।

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने जहां सिक्ख पंथ के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की वहीं अंग्रेज हाकिमों की निर्दयता को जनसमूह के सामने प्रकट करने के लिए १७ सितंबर, १९२२ ई को एक जांच-समिति का गठन भी किया, जिसमें श्री निवास आइसर (भूतपूर्व एडवोकेट जनरल), जे. एम. सेन गुप्ता (बैरिस्टर कलकत्ता), पादरी एस. पी. स्टोक्स (कोटगढ़, शिमला), श्री अभयंकर (बैरिस्टर नागपुर) तथा प्रो. रुचि राम साहनी आदि सदस्य लिए गए। इस समिति ने ११० व्यक्तियों के बयान लिए और ३५२ पृष्ठों पर आधारित एक रिपोर्ट भारतीय लोगों के सामने पेश की। जांच-समिति के निर्णय के अनुसार, "सरकार (अंग्रेजी) राजनीतिक कारणों के आधार पर अकाली आंदोलन को कुचलने के लिए बेचैन थी, मगर अकालियों ने 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' कहते हुए पुलिस की लाठियों के बावजूद कठोर सितम एवं उकसाहट को सहन किया। अकालियों के पास कोई हथियार या लाठियां नहीं थीं। उन्होंने कृपाण के इस्तेमाल का इरादा भी नहीं किया, क्योंकि कृपाण को अकाली अपना धार्मिक चिन्ह समझते हैं।"

उपरोक्त रिपोर्ट ३ जनवरी, १९२४ ई को प्रकाशित की गई और भारत से बाहरी देशों में भी भेजी गई तथा सरकार अंग्रेज के कथित कानून की धज्जियां उड़ाई गईं।

उपरोक्त जांच-समिति के आगे जिन व्यक्तियों ने अपने बयान दिए, उनमें से कुछेक ही पाठकों की नज़र किए जा रहे हैं। ये समूह बयान पुस्तक 'अकाली लहर' पर आधारित हैं :--

प्रो. जोध सिंघ एम. ए. के बयान के अनुसार, "मैंने दो बार मार पड़ती अपनी आंखों से देखी है। प्रथम बार एक सितंबर को गुमटाला पुल पर, जिसके सम्बंध में ४ सितंबर के 'खालसा' में 'गुमटाला पुल पर मार-- घोड़ों के नीचे रौंदना' के शीर्षक तले ख़बर प्रकाशित हुई। वहां घुड़सवार पुलिस का अधिकारी मौजूद था। उसने गालिबन् अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे अकालियों के ऊपर से गुज़रें। दो घोड़े उनके ऊपर से गुज़र गए।"

भाई मोहन सिंघ 'वैद्य' के शब्दों के अनुसार, "हमने देखा कि पुलिस केशों, हाथों, पैरों से पकड़कर सिक्खों को तालाबों एवं गड्ढों में फेंकती है। दो-तीन मिनट के बाद पंडित मालवीय जी वहां आ गए। उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने अपने रुमाल से जख़्मियों के मुंह पोंछे। उसके बाद जख़्मियों को लारियों में फेंकना शुरू किया गया। हमने आंसू भरी आंखों से यह दृश्य भी देखा। पुलिस ने सिंघों के गुप्त अंगों पर भी चोटें मारी थीं। मारपीट के समय सिंघ 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप जपते थे और उनको किसी ने कड़वा वचन नहीं कहा।"

Final

"... हमारे देखते ही देखते पांच अकालियों का जत्था कीकर काटने वाली जगह पर पहुंचा। पुलिस ने बड़ी बेरहमी से जत्थे को मारा, दाढ़ी एवं केशों को नोचा। पुलिस ने कइयों की छाती पर चढ़कर उनको ज़ख़्मी किया। अकाली मार खाकर कई बार उठते रहे और पुलिस हर बार उनको मारती रही। सर जुगिंदर सिंघ तथा पं. मालवीय जी इस दृश्य को देखकर सहन न कर सके। वे शीघ्र ही वापिस लौट गए। प्रो. रुचि राम साहनी, स. बखतावर सिंघ, एम. एल. सी., मैं तथा तीन-चार अन्य सरदार मारपीट का दृश्य देखकर रोते रहे।"

रायज़ादा हंस राज (बैरिस्टर), प्रधान कांग्रेस कमेटी, जलंधर ने यूं बयान दिया, "मेरी मौजूदगी में ११ अकालियों को मारा गया। मैंने उनको बड़े ध्यान से देखा। उनसे शांति भंग होने का कोई भय नहीं था। जब उनको पीटना शुरू किया गया, उनके हाथ जुड़े हुए थे और वे 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप कर रहे थे। वे मार खाकर गिर पड़ते थे। जब पुन: खड़े होते थे तो फिर पीटे जाते थे। मैंने उनके मुंह से 'सतिनाम वाहिगुरु' के बिना कोई शब्द नहीं सुना। वे 'हाय' तक नहीं कहते थे। मि. बी. टी. तथा उसके साथियों द्वारा मारपीट करते देखकर मेरे सामने श्री एंड्रयूज़ (पादरी) की आंखों में से आंसू निकल गए। अकालियों को इस तरह मारा जाता था जैसे पागल कुत्ते को मारा जाता है।"

श्री ज्ञान चंद मनपाल, सहायक संपादक 'वंदे मातरम्', लाहौर के शब्दों में-- "२ सितंबर को पांच बजे शाम को जत्था राजासांसी के पास रोका गया। यह १०० सिंघों का जत्था था। मि. जैकफरसन तथा बी. टी. के साथ ३० पुलिस के आदमी थे। पुलिस ने जत्थे को घेरा डाल लिया तथा मारपीट शुरू कर दी। जत्था ज़मीन पर बैठा हुआ था। पुलिस ने सिंघों के सिर, पेट, छाती तथा पीठ पर लाठियां मारीं। मि. बी. टी. ने दो-तीन आदमियों को लातें मारीं। सख़्त मार खाने के कारण जत्थे के कई सिंघ बेहोश हो गए। जो भी आदमी उठा उसे फिर मारा गया। जो आदमी सड़क के किनारों पर पड़े हुए थे उनको भी मारा गया। जत्थे के ज़ख़्मी तथा बेहोश सिंघों को दाढ़ी, केशों तथा लातों से पकड़कर, घसीटकर, सड़क के दोनों तरफ के खेतों में फेंका गया था। घायलों को उठाने से पहले पंडित मालवीय जी वहां पहुंच गए। उन्होंने घायलों को बड़े ध्यान से देखा। पंडित जी को बहुत दुख हुआ और उनकी आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा, "शैतान यहां काम कर रहे हैं। आखिर, इनको दुख उठाना ही पड़ेगा।" मैंने देखा कि मारपीट के बाद पुलिस के आदमी हंस रहे थे। गुरुद्वारा गुरु का बाग में अकालियों पर जो अत्याचार हुआ उसे जुबान बता नहीं सकती। पुलिस का व्यवहार पशुओं जैसा था और सिंघों का देवताओं वाला। मारपीट के समय अकालियों में परमेश्वर का निवास तथा पुलिस में शैतान बसता था।"

श्री अनंद नारायण, सहायक संपादक, 'ट्रिब्यून', लाहौर ने अपने बयान में इस प्रकार कहा, "अकाली मार खाने के लिए तैयार थे। अकालियों ने पुलिस के साथ कोई धक्का नहीं किया, बल्कि पुलिस ने ही उन्हें रोका। इस पर वे जमीन पर बैठ गए। वे शबद पढ़ रहे थे। पुलिस ने उन्हें घसीटकर सड़क से दूर कर दिया। कइयों को मारा भी गया। कई बैठे हुओं की इतनी मारपीट की गई कि वे बेहोश हो गए।"

श्री के संतानम (बैरिस्टर) जनरल सेक्रेटरी, पंजाब सरकार ने यह कहा, "अकालियों ने शांतमयी का प्रण लिया है। इसका लोगों तथा सरकार को पता है। वे इस प्रण पर कायम हैं। पुलिस पांच तथा छ: फुट की लाठियों द्वारा

Final

उनको मारती है। लाठी बड़ा खतरनाक हथियार है। जब पुलिस अकालियों की दाढ़ी तथा केश नोचती है तो वो सिक्खों का धार्मिक अपमान करती है। मैंने किसी अकाली को मार से जान बचाते हुए नहीं देखा। पुलिस उनके मुंह, छाती, पीठ तथा गुप्त अंगों पर चोट करती है। यह बात बड़ी मुजरिमाना तथा न भूलने वाली है। मैंने पुलिस द्वारा कोई जुबानी तंबीह (चेतावनी) करते हुए नहीं सुना। पुलिस की मारपीट बहुत निर्दयता वाली है। मैं समझता हूं कि अकालियों में भगवान बसता है और पुलिस में पशुवृत्ति की ताकत है। मैंने कोई सरकारी फैसला ऐसा नहीं देखा जिसके द्वारा यह पता चलता हो कि बाग के वृक्ष महंत के हैं, जिन्हें काटने के लिए अकालियों को मना किया गया है।"

लाला दीना नाथ, संपादक 'देश' ने कहा, "मैंने देखा कि जब अकाली धरती पर पड़े हुए थे, पुलिस वाले उनको लातें मारते थे। मि. बी. टी. की मौजूदगी में बेहोश आदमियों को भी लातें मारी जाती थीं। मैंने एक पुलिस वाले को देखा कि वो बेहोश अकाली को केशों से पकड़कर घसीटता था। यह सारा दृश्य आदि से अंत तक बड़ा जालिमाना था। मैंने हकीम अजमल खां को अपने पास बैठे रोते हुए देखा है। हकीम जी के बिना स्वामी श्रद्धा नंद, प्रो. रुचि राम साहनी, लाला दुनीचंद, के संतानम, मलक लाल खां (गुजरांवाला) तथा कुमारी लज्यावती (प्रिंसीपल, कन्या महाविद्यालय, जलंधर) भी वहीं मौजूद थे।"

स. अमर सिंघ, संपादक 'लायल गज़ट' लाहौर के शब्दों के अनुसार, "सरकार अकाली लहर को महंतों की आड़ में दबाना चाहती है, क्योंकि वो इसे आधी राजनीतिक लहर समझती है। यह बात सरकारी बयानों से प्रकट है। मैं कभी-कभी अफ्सरों तथा कौंसिल के सदस्यों के साथ बातचीत करता रहता हूं। उनकी बात से यह बात प्रकट होती है। जब मैंने 'गुरु का बाग' में मार पड़ती देखी तो मैं रो पड़ा। मि. लाब (ए. एस. पी.) ने एक अकाली के गले और सिर पर जूतों सहित पैर रखा। केश सिक्खों के लिए पवित्र हैं। यह देखकर हमारे जज़बात भड़क उठे। हमने दुहाई दी कि इस तरह मत करो। यदि सिक्खों के केश नोचे जाएं तो वे धर्म तथा अपने गुरु का अपमान समझते हैं।"

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे में शामिल समूह गुरसिक्खों ने सरकार अंग्रेजी की पुलिस की वहशियाना मारपीट तथा सितम के बावजूद 'सतिनाम वाहिगुरु' के धुनें उच्चारण करते हुए जिस सहनशीलता, सब्र, हठ एवं त्याग का सबूत दिया है उसकी हिंदोस्तान भर के लोगों ने एक-स्वर होकर भरपूर प्रशंसा की तथा अपने दिल का दर्द आंसुओं के माध्यम से प्रकट किया था। इस मोर्चे की विजय से हमारा आज़ादी-आंदोलन कई कदम आगे जा बढ़ा था। सिक्ख इतिहास का यह गौरवमयी कांड सदा सिक्ख जनसमूह के स्वाभिमान को झकझोरता रहेगा। गुरसिक्खों की इस अज़ीम कुर्बानी के आगे हमारी आने वाली नस्लों का भी सिर झुकता रहेगा। पंडित मेला राम 'वफ़ा' (संपादक, 'वंदे मातरम', लाहौर) ने इन शेयरों के माध्यम से अपनी श्रद्धा प्रकट की है :

तेरी कुर्बानियों की धूम है, आज इस ज़माने में,
बहादुर है अगर कोई, तो वो तू अकाली है।
बड़ी तारीफ के काबिल, तेरी हिम्मत-ओ-जुर्रत,
जद्दोजहद आज़ादी में, तूने जान डाली है।
किया है ज़िंदा तूने, रिवायते-गुजिश्ता को,
सितमगरों से तूने कौम की, इज्जत बचा ली है।
जालिमों की लाठियां तूने सही, सीना-ए-सपर होकर,
लुत्फ इस पै-कि लब पे, शिकायत है न गाली है।

Final

पंजाब : सिक्खों का हिंदोस्तान को तोहफा

-सिरदार कपूर सिंघ (दिवंगत)

वैसाखी का अवसर न केवल सिक्खों, बल्कि सारे हिंदोस्तान के लिए बहुत महत्त्व रखता है। २९ मार्च, १७४८ ई वाले दिन सिक्खों ने गुरमता पास किया था कि वे किसी कीमत पर भी पंजाब को हिंदोस्तान से अलग न होने देंगे, बल्कि इसकी रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देकर इसे हिंदोस्तान के लिए तोहफ़े के रूप में छोड़ जाएंगे। बड़े शोक की बात है कि आज (१९४६ ई, जब यह आलेख लिखा गया था) जबकि हिंदोस्तान के भविष्य के बारे में बड़े ज़रूरी फैसले होने वाले हैं, बहुत कम लोग ऐसे हैं जो विश्व-इतिहास के इस साके से अवगत हों। आम जनता, अखबारों के साधारण पाठक और सामूहिक रूप से इकठ्ठा होकर वोट देने वाले तो एक तरफ रहे, बड़े-बड़े सयाने, नीतिवेत्ता और अपने समय से कहीं आगे (भविष्य में) देख सकने वालों को भी इसका सही पता नहीं।

आज सारे हिंदोस्तान की किस्मत पंजाब की किस्मत के साथ बंधी हुई है। इतिहास के उदय से ही यह बात इसी तरह रही है, चाहे इतिहास के कुछ विद्यार्थियों के अलावा बहुत कम लोग इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत हैं। भौगोलिक नुकते से पंजाब हिंदोस्तान का हिस्सा है, मगर नसली नुकते से यह सदा से ही मध्य एशिया के ज्यादा नज़दीक रहा है। इसी लिए पंजाब का सारा पिछला और वर्तमान इतिहास इन दो विरोधी प्रभावों का प्रतिक्रम रहा है और यह सिक्खों की दूरदर्शिता के कारण ही है कि उन्होंने १७४८ ई में वैसाखी के शुभ अवसर पर महान प्रतिज्ञा कर पंजाब को सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से हिंदोस्तान का अखंड एवं अविभाज्य अंग बना दिया है।

यह बात अब हर तरह से सिद्ध हो चुकी है कि आज से हजारों वर्ष पहले पंजाब और उसके पड़ोसी क्षेत्रों में बहुत विचित्र एवं सभ्य लोग रहते थे। मुहंजोदारो के निवासी, जो बहुत ऊंची और जटिल सभ्यता के मालिक थे, परंतु उनकी राजसी एवं सामाजिक संस्थाओं का उन आर्य हिंदुओं की संस्थाओं के साथ कोई संयोग नहीं था, जो बाद में गंगा के मैदानों में ज्यादा ज़ोर पकड़ गई थीं। इस समय के बारे में इतनी बात ज़रूरी है कि उन दिनों पंजाब उन पश्चिमी इलाकों का एक अंग था जिनको सरस्वती दरिया शेष हिंदोस्तान से अलग करता था और हज़ारों वर्ष इसी तरह ही रहा।

ईसा से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व, पंजाब ईरान के किआनी साम्राज्य का हिस्सा था। शहंशाह दारा के फारस और नक्शीरुस्तम की चट्टानों पर जो शिलालेख उकेरे हुए हैं, उनमें गंधारवादी से परे के एक ऐसे इलाके का जिक्र आता है जो सबसे ज्यादा आबाद और ज़रखेज़ था। बीस बिसवे, इससे मुराद सिंध और पंजाब के कुछ हिस्से ही हैं। अभी तक्षशिला की खुदाई में ईरानी प्रभावों वाला एक शिलालेख निकला है, जिसे किसी ईरानी सरदार ने

Final

उकराया था। इसकी तारीख ईसा से तीन सौ वर्ष पहले की है और यह अरमीनिआ लिपि में लिखा हुआ है। यह अरमीनी आलेख खरोष्टी लिपि के जन्म से संबंध रखने के कारण हमारे लिए विशेष महत्ता रखता है। यह आलेख सिद्ध करता है कि खरोष्टी लिपि का जन्म और विकास पंजाब में ही हुआ, क्योंकि खरोष्टी ईरानी राज्य के पंजाब के एक प्रांत का नाम था। इसके अलावा अशोक के बहुत-से शिलालेख, जो इन क्षेत्रों में मिलते हैं, खरोष्टी लिपि में लिखे गए हैं, खरोष्टी में से ही लंडे निकले हैं जिनमें उत्तरी हिंदोस्तान के बनिया-महाजन अपना व्यापार चलाते हैं। कई लोगों का ख़्याल है कि इन लंडों में से ही उन सिक्खों की पवित्र लिपि 'गुरमुखी' निकली है, जिन्होंने पंजाब को बचा कर हिंदोस्तान को तोहफे के रूप में दिया है।

ईसा से ३२६ वर्ष पूर्व प्रसिद्ध यूनानी विजेता सिकंदर ने ईरान के पुराने साम्राज्य को अलग-थलग कर पंजाब की तरफ चढ़ाई कर दी थी। उत्तरी-पश्चिमी हिंदोस्तान की इस विजय की कहानी इतनी प्रसिद्ध है कि इसे दोहराने की जरूरत नहीं। यह बात भी सभी जानते हैं कि उत्तरी-पश्चिमी हिंदोस्तान को यूनानी साम्राज्य के साथ पक्की तरह से जोड़ने के लिए सिकंदर अपने पीछे बस्तियां और फौज छोड़ गया था। इस प्रकार कुछ समय पंजाब को यूनानियों के कब्ज़े में रहना पड़ा।

चंद्रगुप्त मौर्य के ज़माने में यूनानी फौज को सिंधु नदी के पार धकेल कर तक्षशिला और पंजाब की कई रियासतों को मगध साम्राज्य में मिला लिया गया था। ईसा के जन्म से ३०५ वर्ष पूर्व यूनानी सरदार सेल्यूकस ने पंजाब को जीत कर फिर यूनानी साम्राज्य का हिस्सा बनाने की कोशिश की, परंतु उसकी चंद्रगुप्त के हाथों हार हुई और उसे अपमान वाला अहदनामा करना पड़ा, जिसके अनुसार हिंदुकुश पर्वत के पैरों तक सारे इलाके चंद्रगुप्त को मिल गए। यह बात सबसे पहले चंद्रगुप्त को ही सूझी कि पंजाब पर कब्ज़ा कायम रखने के लिए पंजाब की प्राकृतिक सरहदों अर्थात् हिंदुकुश पर कब्जा रखना जरूरी है और इस बात में किस्मत ने उसकी मदद भी की। पूरे दो हज़ार वर्ष बाद सिक्खों ने एक बार फिर यही बात महसूस की कि जब तक हिंदुकुश सरहदी पहाड़ों पर कब्ज़ा नहीं किया जाता, पंजाब को सुरक्षित रखना संभव नहीं। भारतीय इतिहास के विद्वान जानते हैं कि सरहदी दरिया के हाथों से निकल जाने के कारण कैसे मध्य एशिया में से हमलावरों के काफिले हिंदोस्तान में आते रहे हैं। आरंभ से ही पंजाबी हिंदोस्तान से कहीं ज्यादा बढ़ कर मध्य एशिया के निवासियों के प्रभाव तले रहे हैं।

ईसा से २३१ वर्ष पहले अशोक की मृत्यु के बाद मगध साम्राज्य टूटना आरम्भ हो गया और नये सिरे से बख्तर देश के निवासियों ने पंजाब पर हमले शुरू कर दिए। ये हमलावर उन यूनानियों की औलाद थे जिनको सिकंदर बख्तर में आबाद कर गया था और पंजाब के यूनानी नौ-आबादों के विपरीत थे, जिन्होंने बख्तर में अपनी जड़ें पक्की कर ली थीं। चाहे सिकंदर की जीत ने पंजाब पर कोई पक्का प्रभाव नहीं छोड़ा था, फिर भी पंजाब के पड़ोस में वह कुछ ऐसी यूनानी बस्तियां आबाद कर गया था, जो पंजाब को यूनानी सभ्यता और कला के प्रभाव में बांधने के यत्न में रहीं।

Final

हिंदोस्तान के उत्तरी-पश्चिमी इलाके में यूनानियों का राज्य और प्रभाव एक सदी के करीब रहा। इसके बाद उनको शक जाति के लोगों की बाढ़ बहा कर ले गई। ये शक लोग ईरान के सूबे सिस्तान में बड़ी देर से आबाद थे और उनका खून ईरानी खून के साथ मिल चुका था। सिस्तान से उठ कर ये लोग पंजाब और उसके पड़ोसी मुल्कों पर छा गए। अब साबित हो चुका है कि शकों का राज्य ज्यादा देर तक उत्तरी-पश्चिमी हिंदोस्तान पर यमुना के किनारे तक रहा है।

इसी अरसे में एक चीनी कौम काबुल की वादी में आकर आबाद हो गई थी। ये लोग, जिनको चीनी यूह-चेह कहते हैं, उत्तरी-पश्चिमी चीन में से ईसा से १७० वर्ष पूर्व निकाल दिए गए थे। पहले इन्होंने बख्तर को मारा, फिर ये काबुल की वादी पर कब्ज़ा कर उत्तरी हिंदोस्तान के मैदानों पर छा गए। यह बात साठ या सत्तर सन्-ईस्वी की है, जब कुशानों का मशहूर बादशाह कजूल तक्षशिला की राज्य-गद्दी पर बैठा था। इन कुशानों में से सबसे मशहूर और तगड़ा बादशाह कनिष्क हुआ है और उसके बाद वासुदेव। कनिष्क ने पुरशपुर (आजकल का पेशावर) को अपनी राजधानी बनाया था और मध्य एशिया से लेकर बंगाल की सरहदों तक अपना राज्य कायम कर लिया था। उसके बाद सिक्खों ने पुरशपुर को पिशौर का नाम देकर अपनी उप-राजधानी बनाया।

वासुदेव की मृत्यु तीसरी सदी ईस्वी में हुई, जिसके बाद कुशानों की ताकत कम हो गई, भले ही ये लोग पंजाब में होण (हुंन) जाति के हमले तक अड़े रहे। होणों के हमलों ने न केवल कुशानों की ताकत को ही खत्म किया, बल्कि उत्तरी-पश्चिमी हिंदोस्तान में बुद्ध धर्म को भी समाप्त कर दिया। इन होणों का केंद्र दरिया जेहूं के किनारे पर था। इनके कंधे चौड़े, नाक चपटी, आंखें छोटी-छोटी और गहरी थीं। खोदे होने के कारण ये मर्दाना या बुढ़ापे की शान से वंचित अथवा खाली ही थे। इनका जन्म भी बड़ा रहस्यमयी बताया जाता है। कहते हैं कि सीरिया देश में से कुछ चुड़ेलों को उनके बुरे व्यवहार के कारण निकाल दिया गया था और वे रेगिस्तान में आ बसी थीं, जहां उन्होंने भूत-प्रेतों के साथ संभोग-संयोग किया और ये होण उसी संयोग की उपज हैं। मेहरगुल होण का सबसे प्रसिद्ध नेता था। पहाड़ों की चोटी पर से बड़े-बड़े हाथियों को गिरा कर उनकी चिंघाड़ों को सुन कर खुश होना इसका सबसे बड़ा मनपंसद शुगल था। शायद इसीलिए ५२८ ईस्वी में हिंदोस्तानी राजाओं ने बगावत कर उसे तख़्त से उतार दिया था, परंतु ये 'होण' शायद पंजाबियों की हिम्मत से इतनी जल्दी ख़त्म न हो जाते अगर मध्य एशिया में तरुकश जातियों की बढ़ती ताकत इनके केंद्रों को उजाड़ न देती।

इसके बाद लगभग चार सदियों का अंतराल आ जाता है, जब सरहद के पार की कौमें और छोटे-मोटे सरदार पंजाब को लूटते-मारते रहे हैं। इस समय मध्य-एशिया में तुर्कों की ताकत बहुत बढ़ गई थी और इसलाम के बढ़ते प्रचार ने इनको मुसलमान बना लिया था। इनमें से महमूद गज़नवी ने पंजाब पर अनेक हमले किये और देश को बुरी तरह से उजाड़ा। उसने लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया। कांगड़ा तथा थानेसर के मंदिरों को गिरा कर लूट लिया और पंजाब को अपनी सलतनत का हिस्सा बना लिया। इसके बाद आने वाले

Final

हिंदोस्तान के पंजाब पर मुसलमानी राज्य की कहानी इतनी प्रसिद्ध है कि उसके बारे में विवरण देने की ज़रूरत नहीं। जब मुहम्मद गौरी ने पानीपत के मैदान में आखिरी हिंदू बादशाह को पराजय दी जिससे हिंदोस्तान पर नित्य नये मुसलमानी हमलों का खात्मा हो गया, तो मुसलमानों ने ठाठ से हिंदोस्तान में राज्य करना शुरू किया। इसके बाद लगातार साजिश, कत्ल तथा बगावत का दौर शुरू हुआ और दिल्ली के तख़्त ने कई बार हाथ बदले। अंत में मुगलों ने दिल्ली के तख़्त पर पक्का कब्ज़ा कर लिया। धीरे-धीरे उनका राज्य बढ़ने लगा और औरंगजेब के मरते समय तक लगभग सारे हिंदोस्तान पर छा गया। इस सारे मुसलमानी समय में पंजाब सदा हिंदोस्तानी सभ्यता से अलग और दूर-दूर ही रहा।

अब हमें सन् १७२९ ई में आ जाना चाहिए, जब मुगल साम्राज्य पिघलना शुरू हो गया था और फिर खैबर के पार विदेशी हमले होने लग गए थे। इन हमलों ने एक बार फिर फैसला करना था कि पंजाब ने हिंदोस्तान का अविभक्त अंग रहना है या फिर मध्य एशिया के राजसी भूकंप की लपेट में आना है। यह वही वर्ष है जब नादिर शाह तूफान की तरह पंजाब, सरहिंद और दिल्ली के प्रांतों पर हमलावर बन आया और जब उसने पंजाब को हिंदोस्तान से अलग कर अपने मध्य एशियाई साम्राज्य के साथ गांठने का फैसला किया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद सिक्खों के पहले नेता बाबा बंदा सिंघ बहादुर को शहीद हुए अभी पच्चीस वर्ष ही हुए थे कि सिक्खों की खुशकिस्मती से उनको फिर नवाब कपूर सिंघ, सरदार बाघ सिंघ तथा सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया जैसे योद्धा और सयाने नेता मिल गए थे। इन्होंने झटपट ही नादिर शाह के हमले की मंशा को भांप लिया और खालसे को हर तरह की कुर्बानी देने के लिए ललकारा, ताकि हमलावर के दिल्ली में पैर न लग सकें और न ही वह पंजाब को बाकी के हिंदोस्तान से काट कर अलग कर सके। यह मान कर सिक्खों ने अटक दरिया के किनारे तक नादिर शाह की लौट रही फौज का पीछा किया और हिंदोस्तान की हज़ारों मासूम लड़कियों एवं लड़कों को हमलावरों के पंजे से आज़ाद कराया, जिनको वे काबुल और कंधार के बाज़ारों में गुलाम बना कर बेचने के ख़्याल से ले जा रहे थे। इसके चालीस वर्ष बाद मिस्टर फारस्टर ने अपने 'सफरनामे' में इस साके (शौर्य-गाथा) की तरफ इशारा करते हुए लिखा है-- "जब नादिर शाह की फौज गनीमत (लूट का माल) से लदी हुई दिल्ली से वापिस लौट रही थी तो सिक्ख घुड़सवारों ने उन पर हमला बोल दिया।" अहमद शाह बटालवी, जिसने अपना इतिहास उन्नीसवीं सदी के आरंभ में लिखा है, नादिर शाह और शाही वायसराय, ज़करिया ख़ान के मध्य सिक्खों के बारे में हुई बातचीत इस तरह देता है :-

नादिर-- क्या इस देश में कुछ और फसादी लोग भी थे?

ज़करिया-- नहीं, सिवा . . . फकीरों (सिक्खों) के एक टोले के, जो साल में दो बार अमृतसर के पवित्र ताल में स्नान करने के लिए जमा होते हैं।

नादिर-- वे रहते कहां हैं?

ज़करिया-- वे अपने घोड़ों की काठी पर रहते हैं।

नादिर-- पुत्र! होशियार रहना। बहुत संभव है कि किसी दिन ये लोग देश के राजा

Final

बन जाएं।

नादिर शाह के ईरान लौटने के बाद लाहौर के गवर्नर, खास कर ज़करिया ख़ान और उसके जानशीनों ने सिक्खों को चुन-चुन कर मारना शुरू किया। इसी अरसे में ९ जून, १७४७ ई वाले दिन नादिर शाह मारा गया और उसके सबसे सयाने जरनैल अहमद शाह अब्दाली ने ताकत संभाली। उसने काबुल के मुगल गवर्नर को मार भगाया और पिशौर तक चला गया। यहां बैठ कर शेष रहते हिंदोस्तान को लूटने और पंजाब को उससे काट कर अपने साम्राज्य का हिस्सा बनाने के सपने देखने लगा। सन् १७४७ ई के दिसंबर में उसने पहले हमला किया और ८ जनवरी, १७४८ ई को वह लाहौर पहुंच गया। अब्दाली ने शहर के बाहरी हिस्सों विशेषत: मुगलपुरा को लूट लिया और शेष शहर को ३० लाख रुपए नज़राना लेकर छोड़ा। आने वाले संघर्षों में अब्दाली को किस्मत ने हार देनी शुरू की और मनूंपुर के गांव के समीप मुगल वायसराय के छोटे पुत्र मुईनल मुल्क ने पठान हमलावर को पराजय दे दी। इस तरह से पंजाब मुगल साम्राज्य के लिए बच गया, परंतु गाफिल मुगलों ने न ही इस फतह का कुछ फायदा उठाया और न ही अब्दाली के हमले की महत्ता को समझा। अब्दाली वापिस लौट गया और मुगल सतलुज के किनारे जश्न मनाते रहे। सिक्खों ने और ज्यादा चेतनता से काम लिया। उन्होंने फैसला किया कि हार खाकर भाग रहे दुर्रानी को पंजाब में से सूखा नहीं गुज़रने देंगे। सिक्खों ने झनां दरिया तक उसका पीछा किया ताकि उसे अपने बाहुबल का थोड़ा-सा चमत्कार दिखा दें, जिससे आने वाली सर्दी में अब्दाली का फिर वास्ता पड़ना था। सिक्ख जत्थेदारों की दूरदर्शिता ने समझा कि अब्दाली का यह हमला आखिरी हमला नहीं था। साथ ही वे यह भी जानते थे कि उस समय दुनिया में कोई ऐसी ताकत नहीं थी जो अब्दाली को पंजाब को हिंदोस्तान से अलग कर पठानी साम्राज्य के साथ जोड़ने से रोक सके। उस समय सिक्ख ६५ जत्थों में बंटे हुए थे। प्रत्येक का अलग सरदार था और हर एक साझे काम के लिए कुर्बानी करने को तैयार था। २९ मार्च, सन् १७४८ वैसाखी वाले दिन, जब सिक्ख श्री अमृतसर साहिब इकठ्ठा हुए तो उन्होंने एक गुरमते के माध्यम से सिंघ साहिब, महान जत्थेदार, सुलतान-उल-कौम, नवाब, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान तले एकजुट हो जाने का फैसला किया। सिक्खों की इस साझी फौजी जत्थेबंदी का नाम 'दल खालसा' पड़ा। इस जत्थेबंदी का मुख्य उद्देश्य यह था कि किसी विदेशी हमलावर को उत्तरी-पश्चिमी दरिया में से गुजर कर पंजाब पर राजनीतिक कब्जा न करने दिया जाए, क्योंकि पंजाब के हाथ में आने से उसके लिए हिंदोस्तान पर कब्जा करना आसान हो जाएगा और वह रसातल में जा रहे मुसलमानी साम्राज्य को सहारा देकर फिर खड़ा कर सकेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सिक्खों ने जो कुर्बानियां और संघर्ष किए वे किसी से छिपे नहीं। यह भी स्पष्ट है कि कैसे इन थोड़े-से बहादुर लोगों ने अपनी बुद्धिमता और दिलेरी के साथ दो पीढ़ियों के बाद उत्तरी-पश्चिमी हिंदोस्तान पर मध्य एशिया की तरफ से होने वाले विदेशी हमलों को सदा के लिए रोक दिया। १६ मई, १७६५ ई वाले दिन सिक्खों ने पहला 'गोबिंदशाही' सिक्का

Final

चालू किया, जिस पर यह लिखा था :
देगो तेगो फ़तहि नुसरति बे-दरंग।
याफ़त अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

बाद में महाराजा रणजीत सिंघ के ज़माने में इस सिक्के का नाम 'नानकशाही' कर दिया गया।

कैसे जुल्म और सितम की आग में से निकल कर सिक्ख स्वराज की ऊंचाई पर पहुंचे, यह बात मानवीय इतिहास की दिल दहला देने और आत्मा को जगाने वाली गाथाओं में विशेष स्थान रखती है। १७४९ ई में सबातुद्दीन बेग और मुहम्मद नाजर बेग दो तुर्क सैलानी लाहौर पहुंचे थे। उन दिनों सिक्खों पर जुल्म पूरे ज़ोरों पर था। इन तुर्कों ने लाहौर के गवर्नर को ८ और ९ वर्ष की उम्र के दो तुर्क बच्चे पेश किए थे। उस जमाने के तुर्की और मुगलई रस्मों के जानकारों को पता है कि 'क्यों'। इन दो तुर्क बच्चों में से एक का नाम तहिमासप मिसकीन था, जो बाद में बहुत तरक्की कर गया। सन् १७८२ में इसने पंजाब के हालात के बारे में रिपोर्ट लिखी। यह हस्तलिखित आजकल विलायती अजायब घर लंदन में पड़ी है। इसका नंबर ८८०७ है। इसमें इस तरह लिखा है :-

"लाहौर के गवर्नर ने अपने बहुत-से तोपचियों को सिक्खों को खत्म करने के लिए नियत किया। ये लोग अट्ठाईस-अट्ठाईस कोस तक सिक्खों का पीछा करते थे और जहां भी सिक्ख उनका मुकाबला करते उनको कत्ल कर देते थे। यदि कोई सिक्खों का सिर काट कर लाता था, उसे दस रुपए प्रति सिर मूल्य मिलता था। यदि कोई किसी सिक्ख का घोड़ा छीन लाता था तो उसे वह घोड़ा इनाम में दिया जाता था। यदि सिक्ख के साथ लड़ते-लड़ते किसी का घोड़ा खो जाता या मर जाता तो, उसे सरकारी अस्तबल में से नया घोड़ा मिल जाता था।"

यह लिखना गलत न होगा कि सिक्खों के सिरों का मूल्य घटता-बढ़ता रहता था और कई बार मूल्य अस्सी-अस्सी रुपए तक चढ़ जाता था। विशेष रूप से दिल्ली के शहंशाह फरुख्सियर के ज़माने में सिक्खों के सिर की कीमत बहुत बढ़ गई थी। सिक्खों को यह सब मूल्य पंजाब को मध्य एशियाई गुलामी और प्रभाव से बचाने तथा हिंदोस्तान के साथ जोड़े रखने के लिए अदा करना पड़ा। अगर सिक्ख न होते तो आज पंजाब काबुल का सूबा होता और सदियों से सांस्कृतिक तथा राजनीतिक रूप से हिंदोस्तान से अलग और दूर रहता। अगर सिक्खों का सपना पूरा हो जाता तो तिब्बत के पर्वत और हिंदूकुश से पार की वादी भी आज हिंदोस्तान का हिस्सा होती और सुघड़ राजनीतिज्ञ जानते हैं कि हिंदोस्तान के बचाव के लिए इसका हिंद के कब्ज़े में होना कितना ज़रूरी है।

आलेख को खत्म करने से पहले मैं अपने समकालीन इतिहासकार प्रोफेसर हरी राम गुप्ता की लिखित में से एक हिस्सा देता हूं। वे लिखते हैं :--

"सिक्खों ने पंजाब के लिए 'योद्धाओं का देश का काबिल-ए-रश्क नाम जीता है और सिक्खों को ही इस बात का फख्र हो सकता है कि उन्होंने विदेशी हमलावरों के आगे छाती तान कर उनको रोका है। वे हमलावर, जो पिछले हज़ारों साल से बाढ़ की तरह उत्तरी-पश्चिमी दरिया में से दाख़िल होते रहे हैं, इसलिए उत्तरी हिंदोस्तान के लोगों, ख़ास कर पंजाबियों को सिक्खों का शुक्रगुजार होना चाहिए।"

Final

सेवा के संकल्प में सुनहरी पृष्ठ जोड़ने वाले भक्त पूरन सिंह

*-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'**

गुरमति विचारधारा के अनुसार जहां प्रभु के नाम के सिमरन को महत्त्वपूर्ण एवं कल्याणकारी माना जाता है, वहीं गुरु-घर की निष्काम सेवा के अलावा नि:सहायों, निराश्रितों, दुखियों और गरीबों की सेवा को भी अति उच्च सेवा-कर्म माना जाता है। सभी सिक्ख गुरुओं का, अनेक शिरोमणि भक्तों का, शिरोमणि सेवकों का, गुरसिक्खों का संपूर्ण जीवन दीन-दुखियों, असहाय लोगों के कल्याण तथा भलाई हेतु समर्पित रहा है। ऐसे ही एक शिरोमणि सिक्ख सेवक, गुरमति मार्ग को अपना आदर्श तथा बेसहारा, अपाहिज लोगों की निष्काम सेवा को अपना जीवन-उद्देश्य समझने वाले, उच्च कोटि के विद्वान एवं लेखक, महान् संस्था पिंगलवाड़ा के संस्थापक भक्त पूरन सिंह हुए हैं। उन्होंने दिव्यांग लोगों की सहायता के लिए उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सहयोग से विश्व-प्रसिद्ध संस्था पिंगलवाड़ा की स्थापना की, जिस समय ऐसे लोगों की सहायता हेतु सामाजिक तथा सरकारी तौर पर बहुत कम, नाम-मात्र काम किया जाता था। शायद ही तब कोई संस्था या समूह इन अनाथ, बेसहारा लोगों की ओर ध्यान देता हो!

भक्त पूरन सिंह का जन्म ३ जून, सन् १९०४ ई को गांव राजेवाल, तहसील समराला, जिला लुधियाना में एक हिंदू परिवार में हुआ। उनका पहला नाम रामजी दास था। फिर गुरमति मार्ग से प्रभावित होकर अमृत की दात (बख्शिश) प्राप्त कर पूरन सिंह अर्थात् संपूर्ण मनुष्य बन गए। दशम कक्षा तक उन्होंने शिक्षा लुधियाना के कसबा खन्ना से प्राप्त की। शिक्षा ग्रहण करने के दौरान भक्त पूरन सिंह लाहौर (पाकिस्तान) स्थित गुरुद्वारा डेहरा साहिब के दर्शन-दीदार हेतु अक्सर आया करते थे। लाहौर में ही उनकी माता जी बर्तन साफ करने की सेवा करती थीं।

सन् १९३२ ई की एक घटना है कि भक्त पूरन सिंह अपने जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु गुरुद्वारा डेहरा साहिब के महंत गोपाल सिंह को अपने साथ लेकर गुरुद्वारा साहिब के स्थानीय प्रबंधकों के पास पहुंचे। महंत जी ने उन्हें बताया कि यह युवक अपना जीवन निराश्रितों, दिव्यांगों, भूखे-प्यासे लोगों की सेवा में समर्पित करना चाहता है। प्रबंधकों ने जब उनसे यह पूछा कि इतना नेक व बढ़िया विचार इसके मन में आया कैसे, तब युवा पूरन सिंह ने यूं उत्तर दिया, "मैं एक हिंदू परिवार से था। अब सिंह सज गया हूं। मेरी माता जी धार्मिक विचारों वाली हैं। वे हमेशा ज़रूरतमंदों और यात्रियों की यथावत् सेवा करती हैं। प्रतिदिन नियमपूर्वक 'जपु जी साहिब' का पाठ करती हैं। मैने भी आगे कॉलेज की पढ़ाई करने की बजाय सेवा की पढ़ाई करने का मन बना लिया है। मैं पूरन सिंह अपना संपूर्ण जीवन दीन-दुखियों एवं ज़रूरतमंदों की सहायता करने को समर्पित करना चाहता हूं। अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु मैं सर्वस्व त्याग कर गुरुद्वारा साहिब में ठहर सेवा, सिमरन, परोपकार करने की शिक्षा लेना चाहता हूं।" ऐसे उच्चत्म विचार सुनकर प्रबंधकों ने युवा पूरन सिंह के भोजन व

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; मो. ९८७२२-५४९९०*

Final

आवास का प्रबंध कर दिया।

गुरमति विचारधारा के आलोक में वे अपने जीवन-ध्येय, आदर्श की प्राप्ति हेतु जुट गए। गुरुद्वारा साहिब में जल, लंगर, साफ-सफाई, बर्तनों की धुलाई आदि की सेवा निभाने के बाद भक्त पूरन सिंघ बाहर चले जाते और सड़कों पर गिरे यां लापरवाह लोगों द्वारा गिराए गए कीलों, कांटों, पत्थरों, शीशे के टुकड़ो, कंकड़ों आदि को उठाकर आने-जाने वालों को कष्ट से बचाते। फिर वे पुस्तकालय में बैठकर विद्वानों व महान् लेखकों, चिंतकों के विचारों का अध्ययन, चिंतन-मनन करते। वे स्वयं भी रचना-कर्म करते तथा उच्च कोटि के लेखकों के विचारों को प्रकाशित कर लोगों में मुफ्त बांटते। ऐसा समझिए कि यह उनका नित्य-कर्म बन चुका था। गुरमति मार्ग अर्थात् श्रेष्ठ मार्ग को अपनाने वाले इस अद्भुत एवं अद्वितीय राही को अल्प बुद्धि वाले सिरफिरा, पागल तक कह देते।

सन् १९३४ की बात है कि गुरुद्वारा डेहरा साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी में कोई अज्ञात व्यक्ति एक चार वर्षीय विकलांग व मूक बच्चे को छोड़ गया। भक्त पूरन सिंघ ने उस बच्चे को देखते ही अपनी गोद में उठा लिया। फिर उसकी अच्छी तरह देखभाल, सेवा-संभाल शुरू कर दी। अपना नित्य-कर्म भी जारी रखा। लगभग १४ वर्ष तक वे लगातार उस बच्चे की सेवा-संभाल करते रहे। सन् १९४७ में देश के हुए बंटवारे के वक्त वे उसे धरोहर, विरासत की पूंजी की भांति अपने साथ लेकर श्री अमृतसर साहिब चले आए। यहां पर खालसा कालेज में एक शरणार्थी शिविर (कैंप) लगा हुआ था। इस शिविर में भक्त जी ने मौजूद ज़रूरतमंदों की तन-मन से सेवा-संभाल की।

इस संदर्भ में वे स्वयं बयान करते हैं-- "देश के बंटवारे के समय में अपने साथ एक रुपया पांच आना लेकर आया था। मैंने कछहिरा पहना हुआ था और मेरे बदन पर एक फुलकारी लिपटी हुई थी। इसके अलावा मेरे पास लोहे का एक कटोरा, दो बड़ी कापियां, दो अंग्रेज़ी पत्रिकाएं तथा 'लूला' मेरी पीठ पर था। मैं सदैव ही वाहिगुरु को हाज़िर-नाज़िर समझता रहा हूं। इसी भरोसे पर मैंने हर काम को बिना झिझक अपने हाथ में लिया है।"

भक्त जी उस बच्चे को बहुत प्यार करते थे, स्नेह करते थे। इस संबंध में भक्त जी लिखते हैं, "मेरे जिगर का टुकड़ा 'लूला' बच्चा मेरी ज़िंदगी का सबसे बड़ा सहारा रहा है। अगर वह मुझे न मिलता, तो मैं कुछ न कर सकता, जो कि मैंने पिंगलवाड़ा की स्थापना के रूप में किया है और दुनिया का प्यार तथा सम्मान प्राप्त किया है।" पिआरा सिंघ नामक अशक्त यह बच्चा भक्त पूरन सिंघ की प्रथम पूंजी थी। उसके अंतिम श्वासों तक वे स्वयं उसकी सेवा-संभाल करते रहे।

समाज द्वारा तिरस्कृत किए गए अपाहिज तथा बेसहारा लोग धीरे-धीरे भक्त जी के परिवार में शामिल होते गए। उनकी संख्या बढ़ती चली गई। अब उन सबके लिए एक पक्के ठिकाने की आवश्यकता थी। अब रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर या पेड़ों तले जिंदगी बसर करनी मुश्किल थी। किसी पक्के निवास-स्थल पर ही लावारिसों व अपंगों की देखभाल और चिकित्सा का प्रबंध हो सकता था। उस समय उनका अस्थाई निवास एक बंद पड़े सिनेमा घर में था। नीलामी के दौरान उस सिनेमा घर की कीमत ३५००० रुपए तय की गई। भक्त जी के पास जमापूंजी तो कोई थी नहीं, जिससे उस इमारत को खरीदा जा सकता। संयोगवश उस वक्त शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की बैठक हो रही थी। तत्काल वहां पहुंच भक्त जी ने कमेटी के सदस्यों को सारी स्थिति से अवगत करवाया। उनके उद्गार व विचार सुनकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री दरबार साहिब के कोष में से यह

Final

रकम देने का निर्णय लिया। इस तरह ऐतिहासिक परोपकारी संस्था पिंगलवाड़ा के निर्माण का काम आरंभ हो सका। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरमति विचारधारा, धार्मिक कार्यों के प्रसार व प्रचार हेतु सदैव कार्यशील तो रहती ही है, अपितु समाज-सेवा, परोपकारी कार्यों, शिक्षा-दीक्षा के कार्यों हेतु भी देश-विदेश में सक्रिय व समर्पित रहती है।

हम इस आलेख में बता चुके हैं कि भक्त पूरन सिंघ रचना-कर्म में भी जुटे रहते थे। अपने जीवन की कहानियां लिखने के उद्देश्य के बारे में वे लिखते हैं, "यदि मैं अपने जीवन का लंबा-चौड़ा इतिहास न लिख सका, तब मैं अपनी माता जी और सिक्ख गुरुद्वारा साहिबान के साथ अन्याय कर रहा होऊंगा। मेरी माता जी ने मेरे बचपन में मेरे मन में परोपकार के प्रबल संस्कार डाले थे। इसी कारण मैं यह अद्वितीय कार्य कर सका हूं। अगर मैंने अपना जीवन सिक्ख गुरुद्वारों की छत्र-छाया में न व्यतीत किया होता, तो मेरे जीवन का विकास न होता और न ही देश की सिरमौर संस्था पिंगलवाड़ा का निर्माण संभव हो पाता।"

जहां हमारे गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, भाई घन्हईआ जी जैसे गुरसिक्खों ने सेवा के संकल्प को दृढ़ करवाया, वहीं भक्त पूरन सिंघ ने सेवा के संकल्प में एक खूबसूरत सुनहरी पृष्ठ जोड़ दिया। सिक्ख चिंतक, विद्वान एवं लेखक डॉ. रूप सिंघ लिखते हैं कि सेवा के बारे में लिखना व बोलना आसान है, किंतु सेवा करनी कठिन है। जैसे भक्त जी ने व्यवहारिक रूप से निष्काम सेवा की, वह सेवा की पराकाष्ठा है। हम अस्पतालों, कुष्ठ आश्रमों व पिंगलाघरों में प्रवेश करते समय नाक-मुंह ढांक लेते हैं। भाई गुरदास जी के कथनानुसार गुरु- आशय के अनुसार सेवा करनी उत्तम व प्रमुख कार्य है और इसे करने वाला भी सूरमा (बहादुर) है :

गुर सेवा परधानु सेवक सूर है।

(वार ३:१०)

भक्त पूरन सिंघ महान समाज सेवक होने के अलावा महान लेखक चिंतक और विद्वान भी थे। वे अपने तथा अन्य लेखकों के महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी विचारों व आलेखों को लोक भाषा में लिखकर लोगों तक पहुंचाया करते थे। पंजाबी, हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में असंख्य पुस्तकें, पैंफलेट्स, ट्रैक्टस प्रकाशित कर उन्होंने गुरमति विचारधारा, गुरबाणी के अद्वितीय संदेशों, नैतिक मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाया। वे सच्चे पर्यावरणविद्, सृष्टि के हितैषी भी थे। उन्होंने परमाणु शक्ति के दुरुपयोग, विनाशकारी तत्त्वों तथा हर तरह के प्रदूषण के दुष्प्रभावों के प्रति सरकारों, संगठनों और लोगों को जागरूक करने का महान् कार्य किया। वे प्रकृति के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के सख्त खिलाफ थे।

उनके समाज-सेवा के महान् कार्यों को मान्यता देते हुए तत्कालीन भारतीय सरकार ने उन्हें 'पद्म श्री' सम्मान से सम्मानित किया। सही मायनों में वे 'भारत-रत्न' पाने के अधिकारी थे। सिक्खों को खेद इस बात का भी है कि भक्त पूरन सिंघ नोबेल पुरस्कार से अलंकृत क्यों नहीं किया गया? किसी भी भारतीय सरकार ने इस पुरस्कार हेतु भक्त जी के नाम की सिफारिश क्यों नहीं की?

उपेक्षितों व तिरस्कृतों के मसीहा, बेसहारों को सहारा देने वाले, सेवा के सागर, प्यार व स्नेह के समुद्र भक्त पूरन सिंघ शारीरिक चोला त्याग कर ५ अगस्त, १९९२ ई को प्रभु-चरणों में जा विराजमान हुए। उनकी महान् विरासत व विचारधारा को पिंगलवाड़ा की वर्तमान प्रमुख डॉ. बीबी इंदरजीत कौर पिछले कई वर्षों से संभाल कर आगे बढ़ा रही हैं।

Final

प्रेरणादायक है जीवन कुम्हार का

*-स. करम सिंघ**

मिट्टी से बर्तन बनाने वाले व्यक्ति को कुम्हार, कुंभकार या कुंभार कहा जाता है। ये लोग अपने को ब्रह्मा के वंशज कहते हैं और प्रजापति कहलाते हैं। राग भैरउ में उच्चारण की गई बाणी द्वारा श्री गुरु अमरदास जी हमें समझाते हैं कि जैसे कुम्हार एक ही मिट्टी से कई प्रकार के बर्तन बना लेता है, उसी तरह परमात्मा ने यह सारा संसार एक ज्योति से बनाया है। गुरबाणी में आई उक्त अर्थों वाली पंक्तियां निम्नलिखित अनुसार हैं :

माटी एक सगल संसारा ॥
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥ (पन्ना ११२८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी गंभीरता से पढ़ने पर पता चलता है कि कुम्हार और उसके व्यवसाय से संबंधित अनेक शब्दों का वर्णन किया गया है। कुम्हार के जीवन के बारे में निम्न जानकारी उन वचनों के भावार्थ समझने में सहायता करती है, जिनमें ऐसे शब्दों का वर्णन किया गया है।

मिट्टी से बर्तन (और ईंटें) बनाने के लिए कुम्हार चिकनी मिट्टी का चयन करता है, जिसकी ढुलाई के लिए उसने गधा पाला होता है। शक्ल से भोला-भाला दिखाई देने वाला यह जानवर बहुत चंचल मन वाला होता है। कुम्हार जब उस पर भार लादने की कोशिश करता है तो गधा बहुत हुल्लड़बाज़ी करता है। गधे को एक जगह टिका कर खड़ा रखने के लिए कुम्हार उसकी पिछली टांग एक पैखर के साथ बांध कर इस पैखर का एक सिरा खूंटे के साथ बांध देता है। जितनी देर गधे के ऊपर सारा भार नहीं लादा जाता उतनी देर तक उसकी टांगें खोली नहीं जातीं। कुम्हार गधे की पीठ पर छट रख कर इसमें मिट्टी भर कर घर लाता है। तत्पश्चात इस मिट्टी में पानी डाल कर कुम्हार इसको अच्छी तरह गूंथता है। फिर इस मिट्टी के अलग-अलग आकार के पेड़े बना लिए जाते हैं। जिस जगह पर बैठ कर कुम्हार मिट्टी से बर्तन बनाता है, उसके सामने धरती में गाड़ी हुई खूंटी पर लगभग तीन फुट व्यास का एक चाक टिकाया होता है। कुम्हार मिट्टी का एक-एक पेड़ा चाक पर इसके केंद्र में रखकर इस चाक को खूंटी के गिर्द धरती के समानांतर चारों दिशायों में घुमाता है। चाक पर रखी मिट्टी से कुम्हार अपने हाथों से घड़े, मटके आदि के अलावा अलग-अलग आकार के बर्तन बना देता है। इन कच्चे बर्तनों में पानी नहीं रह सकता, इसलिए इनको पकाने के लिए एक आवें में चिन दिया जाता है और आवें में आग जला दी जाती है। जिन बर्तनों को कुम्हार अपने हाथों से दूसरों की अपेक्षा ज्यादा सुंदर बना देता है वे अधिक कीमत पर बिकते हैं। समय पाकर ये बर्तन टूटने के बाद ठीकरे बन जाते हैं जो किसी काम नहीं आते।

उक्त वर्णन में आए शबद पैखर, छट, गूंथना, पेड़ा, चक, मटकी, टिंड, बर्तन, आवा (आवां) और ठीकरा के अर्थ भाई कान्ह सिंघ

**गांव-डाक : खुड्डा, ज़िला : हुशियारपुर, फोन : ९८१५६-७६४५३*

Final

नाभा के अनुसार 'महान कोश' में निम्न प्रकार हैं:-

पैखर = पैर जकड़ने वाला बंधन।

छट = गधे आदि पर लादने की वह थैली जिसका पीठ पर रहने वाला भाग खाली और दोनों किनारों पर बोझ भरा रहता है।

गूंधना = गूंथना।

पेड़ा = गोला बनाना।

चक (चाक) = लकड़ी का बना गोल चक्कर, जिस पर कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है।

मटकी = लस्सी तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया जाता बर्तन (मटका)।

टिंड = मिट्टी का बर्तन, जिसकी लोटे जैसी शक्ल होती है और उसे हर्ट की माल्ह के साथ पानी निकालने के लिए बांधते हैं।

भांडा = मिट्टी का बर्तन। (गुरबाणी में मानव के शरीर को भी भांडा कहा गया है।)

आवी (आवां) = मिट्टी का बर्तन पकाने वाली भट्टी।

ठीकर = मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा।

(कुम्हार के बारे में लिखी उपरोक्त जानकारी में आए 'घड़ा और गधा' शब्द को गुरबाणी में क्रमश: 'कुंभ' और 'खर' कहा गया है।)

गुरबाणी में सुशोभित जिन वचनों में उक्त शब्दों का वर्णन किया गया है उनमें आई कुछ पंक्तियां निम्न प्रकार हैं :

--मन खुटहर तेरा नही बिसासु
तू महा उदमादा ॥
खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥
(पन्ना ८१५)

--पुत्री कउलु न पालिओ
करि पीरहु कंन्ह मुरटीऐ ॥
दिलि खोटै आकी फिरन्हि
बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)

--कुम्हारै एक जु माटी गूंधी
बहु बिधि बानी लाई ॥
काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥
(पन्ना ४७९)

--मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ
सो जाणै करतारु ॥ (पन्ना ४६६)

--खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए
जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ ॥ (पन्ना ४४२)

--जैसे हरहट की माला टिंड लगत है
इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥
तैसो ही इहु खेलु खसम का
जिउ उस की वडिआई ॥ (पन्ना १३२९)

--तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥
इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥ (पन्ना ४७८)

--कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥
गिआन का बधा मनु रहै
गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (पन्ना ४६९)

--कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥
फरीदा कचै भांडे रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥
(पन्ना १३८२)

--गगै गोइ गाइ जिनि छोडी
गली गोबिदु गरबि भइआ ॥
घड़ि भांडे जिनि आवी साजी
चाड़ण वाहै तई कीआ ॥ (पन्ना ४३२)

--जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥
नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥ (पन्ना १३८)

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

Final

अध्यात्म क्या है?

*-डॉ. नरेश**

राग आसक्ति है। आसक्ति बढ़ती है तो मोह का रूप धारण कर लेती है। मोह बंधन है। यह हमें व्यक्ति, स्थान आदि के साथ बांध देता है। इसी से अहित की आशंका जन्म लेती है। जिससे हमें मोह नहीं है, उसके बारे में कोई दुश्चिंता हमारे मन में पैदा नहीं होती। जिसके प्रति हमें मोह है, उसके अहित की चिंता बार-बार मन में जागृत होती रहती है। पड़ोसी हर रोज़ शाम को चार बजे घर लौटता है। आज छः बज रहे हैं। हमें कोई चिंता नहीं है। हमारा बेटा आज समय पर घर नहीं पहुंचा है। दो घंटे से ऊपर का समय हो गया है। उसके बारे में अनेक प्रकार के बुरे-बुरे विचार मन में उठेंगे-- एक्सीडेंट न हो गया हो, किसी से मारपीट न हो गई हो, किसी उलझन में न फंस गया हो इत्यादि। पड़ोसी के साथ मोह नहीं है, बेटे के साथ मोह है। दुश्चिंता होने या न होने का कारण बेटा या पड़ोसी नहीं है, हमारा मोह है।

मोह अविद्या से उत्पन्न होता है। अविद्या की तीन शक्तियां हैं-- मल, विक्षेप और आवरण। मल में मलिन संस्कारजन्य दोष आते हैं। विक्षेप चित्त में चंचलता को जन्म देता है। आवरण से आत्म-विस्मृति पैदा होती है। अविद्या की ये तीनों शक्तियां मिलकर व्यक्ति को आत्मा का ज्ञान नहीं होने देतीं। आत्म-विस्मृति में उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य आदि का निर्णय कौन करेगा? निर्णय करने वाला विवेक तो विस्मृति से आच्छादित पड़ा है। विस्मृति हटेगी तो पता चलेगा कि मैं कौन हूं, मेरे लिए क्या करणीय है, क्या अकरणीय है।

यही अध्यात्म है। अध्यात्मवाद को रहस्यवाद इसलिए नहीं कहते कि यह समझ में नहीं आता बल्कि इसलिए कहते हैं कि यह उस रहस्य पर से पर्दा हटाता है, जो अविद्या के कारण हमें दिखाई नहीं दे रहा था। हम प्रभु का अंश हैं, इससे हम विस्मृत हैं। विस्मृति समाप्त हो जाए तो पता चल जाता है कि हम प्रभु का अंश हैं। हम अंश हैं तो पूर्ण कौन है? कहां है? उससे जुड़ना किस प्रकार संभव है? इन प्रश्नों का उत्तर पा लेना ही आत्म-ज्ञान है।

रहस्यवाद के लिए अंग्रेज़ी में 'मिस्टिसिज़म' शब्द प्राप्त होता है। 'मिस्टिक' की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा के शब्द 'मुसो' से हुई है, जिसका अर्थ है-- घाव के दो सिरों को जोड़ना। जिस प्रकार घाव के दोनों सिरे जोड़कर टांके लगाने से ज़ख्म भर जाता है, उसी प्रकार प्रभु का अंश तथा प्रभु के सिरे मिला देने से पूर्ण (प्रभु) से अंश के बिछुड़ने का घाव भर जाता है और वियोग की पीड़ा का अंत हो जाता है।

पीड़ा घाव में नहीं, अनुभूति में होती है। आपको चोट लगी है, रक्त रिस रहा है, लेकिन पीड़ा की अनुभूति नहीं हो रही है, तो

**१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९*

Final

आपको उस चोट की परवाह नहीं होगी। दूसरी ओर आपको ज़रा-सी खरोंच आई है लेकिन पीड़ा की अनुभूति बहुत प्रबल है तो आप उस पर तुरंत मरहम लगाएंगे, उसे बार-बार सहलाएंगे। इसी प्रकार यदि आपको अपनी आत्मा के उसके मूल से बिछुड़ने की अनुभूति नहीं है तो आपको आत्मा की परवाह नहीं है, लेकिन जिस किसी को उसकी पीड़ा का एहसास है, उसकी वेदना की अनुभूति है, वह उसे इस पीड़ा से, इस वेदना से मुक्ति दिलाने का प्रयास अवश्य करेगा।

इस पंचभूता शरीर का सम्बंध बाहर के पांचों तत्त्वों के साथ सदैव बना रहता है। यही कारण है कि यह शरीर गर्मी-सर्दी को महसूस करता है, सर्दी में ठिठुरता है, गर्मी में तपता है। मौसमों से भी प्रभावित होता है यह शरीर। बदलते हुए मौसम केवल शरीर को ही नहीं, मन को भी प्रभावित करते हैं। अवसान के बाद ये पांचों तत्व पांचों तत्त्वों में जा मिलते हैं। यदि हम किसी एक भीतरी तत्त्व का सम्बंध बाहर के तत्त्व से बनाकर नहीं रख रहे हैं तो वो है 'बेचारी आत्मा।' आत्मा की इस दयनीय दशा की अनुभूति 'अध्यात्म' है तथा आत्मा की मुक्ति के लिए प्रयास 'साधना' है।

Final

प्रेरणादायक है जीवन कुम्हार का

(पृष्ठ ४५ का शेष)

आसा राग में उच्चारण किए गए वचनों के माध्यम से श्री गुरु नानक देव जी हमें समझाते हैं कि परमात्मा ने जीवों के शरीर रूपी बर्तन खुद ही बनाए हैं और जो दुख-सुख इनकी किस्मत में आता है खुद ही देता है। जिन पर वह कृपा की नज़र करता है, उनको संवारता है अर्थात् उनका जीवन सुधारता है। संबंधित अनमोल वचन इस प्रकार हैं :

आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥
इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥
इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥
तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥
(पन्ना ४७५)

उक्त विस्तार से यह बात सहजता से समझ आ जाती है कि जिस तरह मिट्टी से बर्तन बनाने वाला कुम्हार अपने हाथों के स्पर्श से कुछ बर्तनों को दूसरों की अपेक्षा सुंदर बनाकर अधिक कीमत वाले बना देता है ठीक इसी तरह जिन व्यक्तियों पर परमात्मा कृपा करता है उनका जीवन अनमोल हो जाता है, संवर जाता है। हमें भी सर्वकला समर्थ परमात्मा के आगे यह अरदास करनी चाहिए कि हे अकाल पुरख! अपनी दया-दृष्टि से हमारे अंदर भी शुभ गुणों का संचार करके हमारा जीवन संवारने की कृपा करो जी!

ख़बरनामा

दिल्ली पुलिस द्वारा दो सिक्खों की ज़ालिमाना मारपीट की भाई लौंगोवाल ने की निंदा

श्री अमृतसर : 17 जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने दिल्ली पुलिस द्वारा सिक्ख पिता-पुत्र की अमानवीय ढंग से मारपीट करने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि अलपसंख्यक सिक्खों के साथ ऐसा अन्याय भरा बरताव देश के माथे पर कलंक है। उन्होंने दोषी पुलिस कर्मचारियों के ख़िलाफ़ केस दर्ज कर कानूनी कार्यवाही करने की मांग की। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी कार्यालय से जारी एक बयान में भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने कहा कि यदि किसी मामले में कोई कानून का उल्लंघन करता है तो उसके साथ कानूनी मर्यादा में रहते हुये पेश आना चाहिए, न कि अमानवीय कष्ट देकर। भाई लौंगोवाल ने कहा कि इस मामले से संबंधित दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की भूमिका बेहद प्रशंसनीय रही है, जिसने पीड़ित सिक्ख परिवार की मदद के लिए ठोस कदम उठाए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने देश के गृह मंत्री से अपील की कि सिक्खों पर देश के अंदर होते ऐसे हमलों को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जायें। उन्होंने आम लोगों से भी अपील की कि वे ऐसी घटनाओं के समय मूकदर्शकन बने रहें, बल्कि हो रहे अन्याय को रोकने के लिए एकजुट होने का परिचय दिया जाए।

गुरुद्वारा गुरु डांगमार के मामले को लेकर शिष्टमंडल सिक्किम के मुख्यमंत्री से मिला

श्री अमृतसर : 18 जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्किम में स्थित श्री गुरु नानक देव जी संबंधित ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा गुरु डांगमार साहिब की सेवा-संभाल करने की ज़िम्मेदारी उसे देने की सिक्किम सरकार से मांग की है। सिक्किम के मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमंग से मिले सिक्ख नेताओं के शिष्टमंडल, जिसमें शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल, केंद्रीय मंत्री बीबी हरसिमरत कौर बादल, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका और दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. मनजिंदर सिंघ सिरसा शामिल थे, ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी के 550 वर्षीय प्रकाश पर्व के मद्देनज़र सिक्किम में सुशोभित गुरु साहिब से संबंधित स्थानों का मामला हल किया जाये और वहां अधूरे पड़े कार्य पूरे करवाने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को इजाज़त दी जाये। भाई लौंगोवाल ने जानकारी देते हुये बताया कि मुख्यमंत्री से कहा गया है कि पहले पातशाह जी के ऐतिहासिक स्थानों से संबंधित स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए जिससे सिक्ख कौम अपने पवित्र गुरुधामों के विकास-कार्य करवा सके। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा गुरु डांगमार साहिब के पावन स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी प्रचार-यात्रा के दौरान पड़ाव किया था, जिसकी याद में यह गुरु-घर सुशोभित है। बीते समय में बिना

Final

कारण ही गुरुद्वारा साहिब की एतिहासिकता को चुनौती दी जाती रही है। उन्होंने कहा कि इस गुरु-घर के साथ सिक्ख जगत की भावनाएं जुड़ी हुई हैं। गुरु साहिब के 550 वर्षीय प्रकाश पर्व तक इसका प्रबंध सिक्ख कौम को मिलना चाहिए। भाई लौंगोवाल के अनुसार सिक्किम के मुख्यमंत्री ने भरोसा दिया है कि वे इस मामले को संजीदगी के साथ निपटाने के लिए यत्न करेंगे।

महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने शासन में हर धर्म, वर्ग और संप्रदाय का ख़्याल रखा : डॉ. रूप सिंघ

श्री अमृतसर : 29 जून : पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा श्री डेहरा साहिब, लाहौर में शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ की बरसी के अवसर पर समागम आयोजित किया गया, जिसमें पश्चिमी पंजाब के गवर्नर चौधरी मुहम्मद सरवर, शिरोमणि. गु. प्र. कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ, सदस्य स. गुरमीत सिंघ बूह, डॉ. आमिर अहमद चेयरमैन ई. टी. पी. बी, स. तारा सिंघ प्रधान पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, तारिक वजीर खान ई. टी. पी. बी., इमरान गौंदल उप सचिव ई. टी. पी. बी., स. महिंदरपाल सिंघ संसदीय सचिव ने विशेष रूप से शमूलियत की। इस अवसर पर संबोधित करते हुए डॉ. रूप सिंघ ने कहा कि पाकिस्तान में स्थित श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश-स्थान गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब समूचे विश्व की संगत के लिए बेहद सत्कार वाला है। यहा सिक्खी का निकास, विकास और विगास हुआ। उन्होंने कहा कि इस धरती पर ही शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ ने स्वतंत्र सिक्ख राज्य कायम किया और 1799 ई. में लाहौर के शाही किले पर खालसाई निशान झुलाया। उन्होंने कहा कि महाराजा रणजीत सिंघ का राज्य पंजाब, पंजाबियत और सिक्खी के विकास के लिए अहम पड़ाव था। उनके राज्य में हर धर्म और वर्ग का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता था। उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ को श्रद्धा और सत्कार भेंट करते हुए सिक्ख कौम को जत्थेबंदक शक्ति के साथ जुड़ने की प्रेरणा दी। इस दौरान मुख्य सचिव ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की स्थाप्ति, स्थिति और कार्य-शैली के साथ-साथ प्राप्तियों का भी जिक्र किया।

इस अवसर पर गवर्नर पंजाब चौधरी मुहम्मद सरवर ने सिक्खों की बहादुरी और सिक्ख कौम द्वारा विश्व में की प्राप्तियों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि महाराजा रणजीत सिंघ का शासन धर्म-निरपेक्ष था, जिसमें प्रजा के हर तरह के हक और हित सुरक्षित थे। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य व जत्थे के नेता स. गुरमीत सिंघ बूह ने महाराजा रणजीत सिंघ को सत्कार भेंट करते हुये पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और ओकाफ बोर्ड के अधिकारियों का धन्यवाद किया। पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. तारा सिंघ ने अपने संबोधन में पाकिस्तान पहुची संगत को हार्दिक अभिनंदन कहा। समागम के दौरान गवर्नर पंजाब चौधरी मुहम्मद सरवर को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से स. गुरमीत सिंघ बूह और डॉ. रूप सिंघ ने सम्मानित किया। पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से इनका भी सम्मान किया गया। डॉ. रूप सिंघ ने श्री गुरु नानक देव जी से संबंधित अपनी पुस्तक चौधरी मुहम्मद सरवर को भेंट की।

डॉ. रूप सिंघ ने श्री गुरु नानक देव जी के

Final

550 वर्षीय प्रकाश पर्व समागम से संबंधित शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल की तरफ से भेजा पत्र पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. तारा सिंघ को सौंपा। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने अपने पत्र के माध्यम से श्री ननकाणा साहिब में करवाए जाने वाले समागम के समय हर तरह क ा सहयोग देने का संदेश भेजा है। डॉ. रूप सिंघ ने बताया कि स. तारा सिंघ ने भाई लोंगोवाल द्वारा भेजे पत्र का स्वागत किया है। उन्होंने बताया कि स. तारा सिंघ ने 550वर्षीय प्रकाश पर्व से संबंधित शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से हर तरह का सहयोग लेने की इच्छा प्रकट कर धन्यवाद किया। डॉ. रूप सिंघ ने बताया कि उन्होंने पश्चिम पंजाब के गवर्नर चौधरी मुहम्मद सरवर के साथ भी प्रकाश पर्व समागमों से संबंधित बात की है। उन्होंने बताया कि गवर्नर पंजाब ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को भरोसा दिया है कि गुरु साहिब के प्रकाश पर्व से संबंधित समागम के लिए वे पूर्ण सहयोग देंगे। डॉ. रूप सिंघ के अनुसार चौधरी मुहम्मद सरवर ने पश्चिमी पंजाब की यूनिवर्सिटियों में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से सेमिनार करवाने की मांग को भी स्वीकार किया। इसके अलावा गवर्नर पंजाब ने पाकिस्तान जाने वाले जत्थों के रूट में गुरुद्वारा बाबे दी बेर सियालकोट को भी शामिल करने का सुझाव स्वीकार किया है। मुख्य सचिव ने गवर्नर चौधरी मुहम्मद सरवर और पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. तारा सिंघ के अलावा ओकाफ बोर्ड के अधिकारियों के साथ 25 जुलाई को श्री ननकाणा साहिब से सजाए जाने वाले नगर कीर्तन से संबंधित बात की, जिस पर उन्होंने हर तरह का सहयोग देने और उचित प्रबंध करने का भरोसा दिया।

Final

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की जनरल कमेटी की एकत्रता 28 कार्तिक संवत् नानकशाही 550, मुताबिक 13-11-2018 के प्रस्ताव नंबर 8 की नकल :-

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर का आज का जनरल इज़लास श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी तथा गुरबाणी से संबंधित बेअदबी की दुखदायी घटनाओं की पुरज़ोर शब्दों में निंदा करते हुए पंजाब सरकार तथा भारत सरकार से पुरज़ोर मांग करता है कि जागत ज्योति सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के साथ किसी प्रकार की निरादरी वाली कार्यवाही करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही को कठोरता के साथ अमल में लाया जाए।

आज का जनरल इजलास ऐसी दुर्भाग्यपूर्णा घटनाओं को रोकने के लिए तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अदब-सत्कार बहाल रखने के लिए देश-विदेश में स्थापित गुरुद्वारा साहिबान की प्रबंधक कमेटियों एवं ग्रंथी साहिबान को सचेत रहने की अपील करता है। भविष्य में यदि कहीं भी बेअदबी की घटना घटित होती है तो उसकी नैतिक रूप से जिम्मेदारी स्थानीय गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान, सचिव, पदाधिकारियों तथा ग्रंथी साहिबान की होगी।